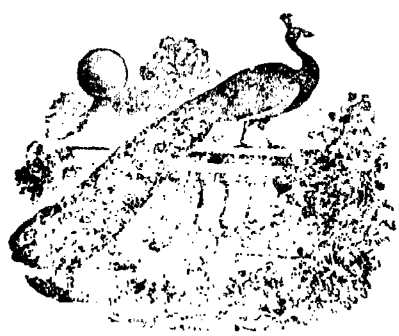
विज्ञापन ।

एक दिन में अपने कई मित्रों के साथ पढ़ने लिखने की बात चित करता था प्रसंग वस पटना कालिज स्कुल के तीसरे मास्टर बाबू साहब बाबू शिवप्रसादसिंहने कहा कि परम दयालु महारानी और इन के कारबारियों की कृपा से इस देश की स्त्रीयों ने भी पढ़ना लिखना आरंभ किया यह इसदेश का बड़ा उपकार हुआ यदि हमारे प्राचीन मनुसंहिता आदि संस्कृत ग्रन्थों के वाक्यों में जो स्त्रीयों की शिक्षा और उन्हें अवश्य काम करने को कहा है उनका हिन्दी भाषा में उल्था हो जाता तो कुल स्त्रीयां अपना काम भली भांति जान जातीं इस से उनका अधिक उपकार होता इस कारण मैनें संस्कृत के कई प्राचीन ग्रन्थों को देख कर सधारण से जो सब गृहस्थों की स्त्रियों को करना उचित है उसे हिन्दी भाषा में इतिहास के साथ प्रकाश कर इसका नाम कुलांगनोपदेश रख उक्त बाबू साहब को समर्प्पण कर दिया उन्हों ने इसे छपाया इस ग्रन्थ के पढ़ने से कुलांगना अपना काम भली भांति जान जांगी और अपने लड़के लड़कियों को पढ़ने लिखने की शिक्षा और सहायता देंगी यदि लड़के इस ग्रन्थ को पढ़ कर इस में कही हुई रीति को अपने मा बहिन आदि स्त्रियों से कहेंगे और उन्हें उपदेश देंगे तो उनका पढ़ने लिखने में चित दौड़ेगा और अपनी सन्तति को पढ़ने लिखने का उपदेश देंगी इस ग्रन्थ में जो भूल चूक हो उसे महात्मा लोग क्षमा करें ।

रामावतार ओझा ।

पटना गवर्नमेंट कालिज स्कुल के जूनियर संस्कृत अध्यापक ।

२ री जुलाई १८८६ ई० ।



साखीराम भट्ट ने छाप कर प्रकाश किया।

कुलाङ्गनोपदेश।

श्रीगणेशायनम: । ईश्वर ने इस चर अचर जगत् की रचना करके इस में देवता दैत्य दानव राक्षस मनुष्य पशु पक्षी आदि अनेक भेद किये उन प्रत्येक भेदों मे जितने भेद हैं वे मनुष्य की बुद्धि से बाहर हैं। पहले समय में इस देश के मनुष्यों के ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र ये चार प्रधान भेद किये गये थे आज पर्य्यन्त चले जाते हैं ब्रह्मचर्य्य गार्हस्थ्य वानप्रस्थ, सन्न्यास ये चार आश्रम के भेद हैं ब्राह्मण को पहले चार आश्रमों में क्रम से रहने की आज्ञा दी है क्षत्री को सन्न्यासाश्रम में नहीं जाना चाहिये और वैश्य को भी पहले तीन आश्रमों में रहना चाहिये शूद्र को पहले चार वर्णों की सेवा से निर्वाह करने को कहा है यावत् पर्य्यन्त ब्रह्मचर्य आश्रम में रहते हैं तावत्पर्य्यन्त ब्रह्मचारी गार्हस्थ्य में रहने वाले को गृहस्थ वानप्रस्थ में रहने वाले को वानप्रस्थ सन्न्यास में रहने वाले को सन्न्यासी कहते हैं। मनुसंहिता में कहा है कि ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ और सन्न्यासी इन चारों की जड़ गृहस्थ ही है और श्रुति स्मृति से विदित होता है कि सब आश्रमियों में गृहस्थ श्रेष्ठ हैं क्योंकि ब्रह्मचारी आदि तीनों आश्रमियों का निर्वाह गृहस्थ का अधीन है जैसा सब नदियों का आश्रय सागर मिलता है वैसाही सब आश्रमी गृहस्थ के घर आश्रय पाते हैं गृहस्थाश्रम इस लोक में सुख और पर लोक में उत्तम गति पाने का द्वार है इस आश्रम में रह कर परलोक में फल देने वाले कर्मों को सहज से कर सकते हैं और ईश्वर की आज्ञा सहज से मानी जा सकती हैं सब दूसरे आश्रम वाले गृहस्थ के भरोसा रखते और उसी से

द्वार पर जाते इस से पूजा और सहायता पाकर अपने अपने आश्रम के धर्म कर्म का पालन करते हैं, ब्रह्मचारी आदि आश्रमियों को अपने आन्तरिक इन्द्री शत्रु की बस करने में बड़ी सावधानी और परिश्रम करना पड़ता है गृहस्थाश्रम तो मानो इन शत्रुओं से बचने के निमित्त दृढ़ किला है जब ब्रह्मचारी अपने आन्तरिक शत्रु से पीड़ा पाने लगते हैं तो ब्रह्मचर्य्य निरावरणस्थान से इस गार्हस्थाश्रम कोट में आ जाते हैं गृहस्थ इन वैरियों को थोड़ा भोग देकर इन से बचे रहते हैं इन से उन की लड़ने की आज्ञा नहीं दी है दूसरे आश्रमियों को तो इन शत्रुओं से लड़ कर बस करना पड़ता है यदि इन्द्रियां अपने अपने विषय की ओर जाने लगती हैं तो इन को बड़ी सावधानी से रोकना पड़ता गृहस्थ को रोकना नहीं पड़ता इन को थोड़ा भोग देकर इन से बचे रहते हैं वे भी इन को यथेष्ट भोग नहीं देते यदि इन्द्रियां अति भोग में लगजाती हैं तो जैसे बिन सिखलाये चंचल घोड़े रथ को किसी कुए वा गड़हे में डाल कर रथी को बिना काम का कर देते हैं वैसाही इन्द्रियां जीव को भोग के बस कर रोगी कर देती हैं और अन्त में नरक का पथ दिखलाती हैं गृहस्थ का यह परम धर्म है कि इस के द्वार पर कोई आश्रमी वा अभ्यागत उत्तम जाति पर क्या कोई नीच भी आ जा तो उस को उचित सुपास और पहुनई करनी पड़ती है यह नियम नहीं है कि छोटी जाति के द्वार पर बड़ी जाति के मनुष्य पहुंचे तो उस की सेवा करनी चाहिये उत्तम वर्ण ब्राह्मणादि के द्वार पर यदि नीच भी वर्ण समय पर जा पड़े तो ब्राह्मण को उचित पहुनई करनी पड़ती है क्योंकि अभ्यागत देवता स्वरूप हैं यह नियम नहीं है कि यदि बहुत सी खाने पीने की वस्तु हो तो पाहुने की पहुनई की जाती है कुछ न हो तो इसाने के तृण पवित्र भूमि पानी मधुरसत्यवाणी ये अच्छे लोगों के घर सदा बने रहते हैं।

गृहस्थ के सब धर्म्म औरसुख गृहिणी के अधीन हैं यदि अच्छी घरनी न हुई तो धर्म्म और सुख की सब सामग्री रहते धर्म्म और सुख नहीं होता वे सुख की वस्तु दुःखदायी होती हैं अन्त में गृहस्थ नरक में पड़ते हैं मनु जीने कहा है कि स्त्रियां अनेक कल्याण के भाजन सन्तति के हेतु और लक्ष्मी के समान गृह की शोभा हैं इस कारण बुद्धिमान लोग बहुत सोच विचार कुल घर कन्या देख कर व्याह करते हैं।

द्रविड़ देश में कांची नाम नगर है वहां देश प्रदेश में प्रसिद्ध क्रोड़पति एक सेठ रहता था उस की एक लड़का हुआ वह स्वभाव से बुद्धिमान और सुशील था जब वह पढ़ लिख निपुण हुआ अठारह बर्ष की अवस्था में पहुंचा तो उसे चिन्ता हुई कि बिन गृहिणी गृह भूत का डेरा और गुणहिन स्त्री दुःख की सभा है बिन गृहिणी गृहस्थ नहीं कहाता और गुणहीन स्त्री से सुख की सम्भावना नहीं है क्या करूं किस उपाय रूप गुणयुत सुलक्षण गृहिणी मिले यदि किसी कारबारी वा भाई बन्धु वा पुरोहित को इस काम के निमित्त भेजूं तो सम्भव है कि जाति पांति में श्रेष्ठ प्रतिष्ठित ससुराल मिले परन्तु गुणवति सुलक्षण कन्या मिलने में सर्वथा सन्देह है क्योंकि कन्या की परीक्षा करनी सहज नहीं है मनु जी ने कहा है कि जिस कुल में परंपरा से निन्दित काम होता आता हो वा संस्कार नहीं होता हो वा मूर्खता चली आती हो वा प्रायः कन्या जन्मती हों वा परंपरा से अधिक रोंगटेवाले मनुष्य उत्पन्न होते हों वा बावसीर क्षयी मन्दाग्नि मृगी वा अठारह प्रकार के कुष्ट रोगों में से कोई होता हो उस कुल की कन्या नहीं ब्याहनी चाहिये क्योंकि उस कन्या को भी कुल का रोग हो जाता है और उस से उत्पन्न बालक को भी रोग गृस लेता है फिर कुल के कुल को वह रोग नहीं छोड़ता और यह भी कहा है कि जिस कन्या का रंग कपिल हो वा कोई अंग अधिक हो

वा कन्या रोगी हो जिसे रोंगटे न हो वा अधिक रोंगटे हों उस से व्याह नहीं करनां चाहिये और जो बहुत बकती हो वा पेड़ नदी म्लेछ पर्व्वत वन पक्षी सांप दास इन में से किसी के नाम से पुकारी जाती वा उसका डेरावांन नाम होतो उस के साथ व्याह नहीं करना चाहिये जिस का अंग हीन न हो जो हंस और हाथी के समान चलती हो जिस के केश बारीक और दांत गोल पतले और शरीर कोमल हों सुनने में जिस का नाम मधुर विदित हो उस कन्या से व्याह करना चाहिये इसी कारण मनुजी ने कहा है कि कन्या का नाम ऐसा रखना चाहिये जिस के उच्चारण और अर्थ समझने में कठिनता न पड़े और उससे मनोहर वस्तु मंगल और आशीर्बाद इन तीनों में से किसी एक की प्रतीति हो जाय जैसा यशोदा ऐसे सोच बिचार में पड़ा ही था कि एकाएक उस के मन में आया कि प्रायः स्त्रियां कार्त्तान्तिक के अर्थात् शरीर के रेखों को देख कर शुभ अशुभ के कहने वालों के सन्मुख हो जाती हैं बड़े बड़े घर की स्त्रियां भी हाथ देखुओं को देखतेही लड़के लड़कियों के हाथ पकड़ उस के आगे करदेती हैं यदि लड़का व्याह की योग्य अवस्था में पहुंचा रहता है तो पुछती हैं कि इस का व्याह इस वर्ष में होगा वा नहीं यदि कन्या व्याह के योग्य हुई रहती है तो कहती हैं कि इस वर्ष में इसका बृहस्पति बनता है वा नहीं इसे कैसा घर बर मिलेगा प्रतिष्ठित कुलीन के घर की स्त्रियों को कन्यों की अधिक चिन्ता रहती है कहती हैं कि महाराज कन्या दोनों कुलों को संदेह में डाले रहती है यदि इन्हें घर बर अच्छा नहीं मिलता तो जीवन पर्य्यन्त मा बाप को उन का दुख बना रहता है इस प्रकार के स्त्रियों का स्वभाव सोच विचार कर बुद्धिमान ने था ही किसी कार्तान्तिक को दान मान सत्कार से प्रसन्न और सन्तुष्ट कर उस की बिद्या में निपुण हो गांठ में आध सेर धान बांध गुप चुप भेष बदल पृथिवी पर्य्यटन करने लगा जिस ग्राम वा न-

गर में पहुंचता था अपनी विद्या को प्रगट करता था जहां जाता था स्त्रियां अपने अपने लड़कों को उस के सन्मुख करती थीं, प्रायः इस विद्या के जानने वाले ठग होते थोड़ा जानते बहुत बात बनाते और झूठ कहते हैं उस को खाने पीने वा द्रव्य की तामा न थी सच कहता था जो कहता था वह घटजाता था इसकारण उस पर लोगों का विश्वास होता था उस को तो अपनी जाति की कन्यों को देखने की इच्छा थी इस कारण पता गला कर अपनी जाति के घर पहुंचता था यदि किसी कन्या को सुलक्षणा देखता था तो पूछता था कि हे सुन्दरी इस धान से एक मनुष्य को व्यंजन के साथ मधुर भात खिला सकती हो इस हेतु कहीं आदर कहीं निरादर पाता था कोई कहता था कि विद्या तो अच्छी है पर इस की बुद्धि में कुछ भेद पड़गया। कोई कहता था कि उन्मत्त हो जाता है इस प्रकार आदर निरादर भोगता हुआ एक घर से दूसरे घर पहुंचता था निदान एक दिन सिवी देश में कावेरी के दहने किनारे पर एक नगर है वहां पहुंचा वहां उस को विदित हुआ कि इस नगर में पहले एक साहुकार था प्रारब्ध वस इस समय उस की सम्पति नष्ट हो गयी है उसे एक कन्या है वह रूप गुण से शोभित विवाह के योग्य अवस्था पर पहूंची है पर सेठ को बिवाह का योग नहीं लगता उस के पास समा नहीं है सुनते ही आस पास के घर होते उस सेठ के घर पहुंचा वहां धाय सेठ की कन्या को कार्त्तान्ति के सन्मुख ले आयी— गिड़गिड़ा कर उस कन्या के भावी शुभा शुभ पूछने लगी पर कार्त्तान्तिक उस कन्या के रूप और लक्षण देखतेही मोहित हो गया कन्या के रूप उस के अन्तःकरण और दृष्टि को बस और अचंचल कर दिया सोचने लगा कि इस सुन्दरी के हाथ पैर आदि सब अंग न अति दुबले न छोटे न अति मोटे न लम्बे हैं दोनों हाथ अति कोमल मनोहर हैं ये करतल और अंगुलियां कमल को लजाती हैं और हाथ जब मत्स्य कमल

कलश आदि अनेक शुभ रेखों से शोभित देख पड़ते हैं दोनों हाथों के नख मणि के समान चिकने और कोमल देख पड़ते हैं कमल की समान हाथ के मध्य रेखों से विदित होता है कि यह धन अन्य लड़के बालों से भरी पुरी सदा सोहागिन बनी रहेगी इस में पतिव्रता के पुरा चिन्ह देख पड़ता है। इस के बांह कन्धे से अंगुलियों पर्य्यन्त सुन्दरता और सुकुमारता से शोभ रहे हैं कंठ शंख के समान पुष्ट ओठ बिंबा फल को लजाता है और भौं धनुष के समान ऐसे टेढ़े विदित होते हैं कि जान पड़ते हैं कि ये काम के धनुष हैं नाक तिल के फुल आंखें काले कमल के सदृश हैं इस के ललाट देखने से सरद पुर्णिमा के चन्द्रमा को देखने की अपेक्षा नहीं होगी केश तो मानों गुथे भौंरे जान पड़ते हैं जिस अंग की ओर दृष्टी जाती है वहां ही रह जाती है इस प्रकार की आकृति सदा सुशीलता के साथ रहती है और मन्वादि धर्म्मशास्त्र में जैसी कन्या के साथ विवाह करने की आज्ञा दी है वैसा ही यह देख पड़ती है इस को परीक्षा कर विवाह का उपाय करूं बिना विचार किया काम दुख का हेतु होता है और सदा सन्देही का कोई काम नही होता निदान उस ने उस कन्या पर दृष्टि पात कर कहा कि ऐ सुन्दरी इतने धान से एक मनुष्य को भली भांति भोजन करा सकती है कन्या ने उसे सुन उस बूढ़िये दासी की ओर देखा दासी ने उस का अभिप्राय समझ उस कार्त्तान्तिक के हाथ से धान ले लिया उस के पैर धोला कर बैठने के निमित्त लिपी पोती विमल पवित्र भूमि पर बिस्तरा डसाबैठा या कन्या उस धान को थोड़ी देर पर्य्यन्त धूप में रख कर दृढ सम भूमि पर धीरे धीरे कूट चावल को भूसे से ऐसा पृथक् किया कि चावल न टूटे और भूसा जैसा का जैसा बना रहा उस भूसे को दासी के हाथ दे कहा कि मा ये भूसे सोनार के काम के हैं इन्हे उसे देने से जो कौड़ियां मिले उन से अति सुखे न अति ओदे थोड़े से दृढ़ इन्धन और एक छोटी सो हंडिया और दो छोटे कसोरे ले लो दासी उधर

हाट की ओर गयी कन्या ने ओखल में रख धीरे धीरे चावल को कन से पृथक् किया इतने में दासी भी अपना काम कर आयी कन्या ने आगि बाल बात की बात में अदहन अति उष्ण कर चावल को तीन बार धो हंडिये में छोड़ दिया जब चावल खिलने पर आये तो कसरे को हंडिये के मुहं पर रख धीरे धीरे मांड़ निकाल लियो थोड़ी देर हंडिये को चुल्हे पर रख दिया आग को बुझा कर जो कोइले निकले उन्हें धाय के हाथ दे कर कहा कि अम्बा इन कोइलों को किसी लोहार को दे कर जो मिले उस से थोड़ा घी काली मिरची थोड़ी खटाई दो चार अंवले लेओ धायने वैसा ही किया अंवलों को पीसकर धाय के हाथ दे कहा कि मा पाहुने को स्नान करा दे धाय अपने काम में लगी कन्याने थोड़े मांड़ कसोरे में रख ठंढा किया उस में थोड़ी खटाई लोन और हिंग का बघार दे अनेक सुगंध की वस्तुओं से सुबासित कर ठंढा किया इतने में पाहुना स्नान सन्ध्या आदि नियम से सावकाश पा कर आया कन्या ने पहले उसी मांड़ को उस के आगे रख दिया पथिक ने उसे पिआ पीते ही उस की थकावट गयी मानो उस मांड़ ने पथिक के शरीर में पहुचते ही सूर्य्य के किरणों का ताप और पथ के परिश्रम को निकाल दिया ठंढा हुआ इतने में हरे केले के पत्ते पर जूही के फूल के समान सपेद भात पड़ा पाया और एक ओर थोड़ी सी चटनी देख पड़ी धीरे धीरे खाने लगा अन्त में पानी मांगा अनेक सुगन्ध वस्तुओं में सुगन्ध धार खिले पाटल अर्थात् गुलाब के फूल से वासित और कमल के फूल से ढंपे हुए नये झंझरे से कसोरे में गिरते पानी देख उठा कर पीने लगा पीता जाता था और उस कसोरे में पतले धार से पानी गिरता जाता था कंठ पर्य्यन्त पी कर पथिक ने सिर हिलाया पानी का भार निवृत्त हुआ पथिक सन्तुष्ट हो कर उठा दासी ने हाथ धोलाया मुख सुधी दे कर पवित्रलिपी भूमि पर ले जा बिस्तरा डसा दिया पथिक ने उस पर अपना डोपट्टा डसा कर आराम

जिस ने पहले कन्या के शुभ लक्षण देख कर अपना पता ठिकाना कन्या के बाप से कह कर अपनी प्रतिज्ञा सुना दी थी निदान उस कन्या को ब्याह कर घर ले आया वह कन्या पति को देवता समझती थी उसी प्रकार उस की सेवा करती थी और घर के बड़े छोटे काम को ऐसी चौकसी और चतुराई से उठा लिया कि पति को कभी किसी प्रकार का श्रम नहीं होता था न चिन्ता रहती थी। कुटुम्ब दास दासी आदि परिजनों को ऐसा प्रसन्न रखती थी कि कभी वे उस घर को छोड़ते नहीं थे उस की सेवा के बस हो कर पति ने सब कुटुम्ब दास दासियों को उस के अधीन कर दिया और अपना जीवन उस के अधीन समझता था इस से उसे अर्थ धर्म काम ये तीनों पदार्थ सहज से मिलते जाते थे ।

मनुजीने कहा है कि पुरुषों के सब सस्कारों में वेद के मन्त्र पढे जाते हैं परन्तु स्त्रियों के केवल विवाह में वेद का मन्त्र पढ़ा जाता है दूसरे संस्कार बिना मन्त्र किये जाते हैं ब्राह्मण क्षत्री वैश्य इन तीन वर्णों को यज्ञोपवीत संस्कार के अनन्तर गुरु के निकट रह कर वेद पढना गुरु की सेवा और अति कठिन ब्रह्मचर्य्य धर्म्म निबाहना पड़ता है परन्तु स्त्रियों का दूसरा कोई धर्म्म नहीं है गुरु की सेवा ब्रह्मचर्य्यादि धर्म्म के स्थाने में केवल पती की सेवा और उस की आज्ञा में रहना परम धर्म्म है पुरुषों को वेद पढ़ ब्रह्म चर्य्य को पुरा कर गुरु की आज्ञा ले वेद की विधि से स्नान कर गृहस्थ धर्म्म का स्वीकार कर सबेरे और सन्ध्या समय विधी से अग्नी में होम करना पड़ता है स्त्रियों को घर का काम ही अग्नि की सेवा है अर्थात् पति की सेवा और घर का काम स्त्रियों का परम धर्म्म है इन्ही कामोंसे वे इस लोक में यश और पर लोक में उत्तम गति पाती हैं मनुसंहिता देखने से स्त्रियों का इतना ही परम धर्म्म विदित होता है कि चाहे वे लड़कपन की अवस्था मे हों वा युवति हों वा बूढ़ापे में पहुची हों घर के छोटे से छोटे काम को पति की वा जिस के अधिकार में उन को रहने

की आज्ञा दी है उस की आज्ञा बिना अपने मन से स्वतन्त्र हो न करें ।

. मनुसंहिता देखने से विदित होता है कि स्त्रियां कन्या की अवस्था में पिता की आज्ञा में और यौवन की अवस्था में पति के अधीन रहें देव वस पति की अवर्त्तमानता में लड़कों के कहने के अनुसार चलें किसी अवस्था में स्त्रियों को स्वतन्त्र नहीं रहना चाहिये नारद जी ने कहा है कि पति आदि के अभाव में स्त्रियों को चाहिये कि पति के कुल में जो उस के समीपी हों उस के बस रहे उस के न रहते बाप के समीपी के अधीन रहें दोनों ओर के अभाव में राजा के अधीन रहें इस से विदित होता है कि स्त्रियों की स्वतन्त्रता उन की हानी का हेतु है ।

स्त्रियों को चाहिये कि स्वतन्त्र होकर बाप से वा पति से अथवा लड़कों से पृथक् रहने की इच्छा न करें क्योंकि यदि स्त्रियां इन के बस नहीं रहतीं तो निन्दित पथ पर पैर रख पिता और पति दोनों के कुलों को निन्दित कर देती हैं ।

स्त्रियों को चाहिये कि पति के विरुद्ध वा कुपित हो जाने पर भी उस से वा उस के घर के लोगों से आप कुपित न हों न मुह बनाए रहैं पति से और उस के कुटुम्बों से प्रसन्न हो कर बोलें और घर के कामों को चतुराई से करती रहैं घर के बासन बर्त्तन को पवित्र रक्खें और बहुत व्यय अर्थात् खरच से हाथ सिकोड़े रहैं ।

जो कुलीन पतिव्रता स्त्री इस लोक में यश और परलोक में उत्तम गति चाहती हैं वे पति के कुपित हो जाने पर चतुराई और भक्ति से उसे प्रसन्न कर लेती हैं ।

सौराष्ट्र देश में वलभी नाम नगर है वहां धन में कुबेर के समान लोक में विख्यात जहाजी धनीज में प्रसिद्ध बीर्वा लेनेवालों का अधिपति गृहगुप्तनाम साहुकार था उसे एक कन्या हुई उस का नाम रत्नवती रक्खा जब वह व्याह की अवस्था में पहुंची तब उसे वाणिज्य करने वालों के अधिपति का लड़का बलभद्र नाम मधुमती नगर से

आ कर व्याह ले गया कुछ दिन बीतने न पाये कौरव बस बलभद्र रत्न-वती से ऐसा अप्रसन्न हुआ कि उस का मुंह देखना दूर रहै उस की नाम से जलता था मा बाप हित मित्र सब समझा कर थक गये कहने पर सिर नीचे कर लेता था लज्जा से मानो शरीर में पैठता जाता था पर किसी का कहना नहीं किया सब लोग कहने लगे कि यह कन्या बुड़ी अभागिन है हमारा घर और वंश नष्ट किया न इसे रखते बनता न इस के मा बाप के घर भेजते। इस के रहते लड़के का दूसरा व्याह होना कठिन है इस प्रकार उसे प्रतिदिन धृकारते और निरा-दर करते थे निदान कहने लगे कि झुठमुठ इस का नाम रत्नवती रक्खा इस के नाम सुनतेही पति मुंह बिगाड़ देता है इस कारण इस का नाम निम्बवती धरना चाहिये निदान उस दिन से रत्नवती को निम्ब-वती कहने लगे और उसे अनादर की दृष्टि से देखने लगे इस प्रकार प्रतिदिन उस का अनादर बढ़ता जाता था वह कुलीन की कन्या थी सहना छोड़ दूसरा उपाय न देख धीरता से सहती और मनही मन तपती थी कहती थी की दैव मुझ से कौन पाप हो गया है मेरी कौन गती होगी कुलबधुओं की गति पति है वह मेरा नाम सुनते जलता है उस की प्रसन्नता विना मेरा जीवन व्यर्थ है कष्ट पड़ने पर भी जो अपना धर्म्म नहीं छोड़ते उन की सहायता ईश्वर करते हैं दैव का करना एक दिन एक पूजेरी की बुढ़िया प्रसाद और माला लेकर आयी दैव बस उस समय घर की स्त्रियां किसी काम में बझी थीं वह रत्नवती को तनछीण मनमलीन आंखों से आसु की धारा ढालती देख कहने लगी बहू तुझे ऐसा कौन दुख पड़ा है तू किस चिन्ता में मगन हो रही है तू बड़े की बेटी बड़े घर में पड़ी पति रूप यौवन युत पढ़ा लिखा सुशील मिला है स्त्रियां मा बाप के घर कितने दिन रह सकती हैं मा बाप तो जन्माते हैं स्त्रियों की गति पति का घर है इस प्रकार कितना समझाती थी पर रत्नवती का विलाप बढ़ता ही जाता था अन्त में

उस के बिलाप देख• बुढ़िया भी आंसु ढालती अनेक प्रकार समझाती और अनुनय करती जाती थी पर रत्नवती रोती और लज्जा में डूबती जाती थी जब बुढ़िया ने बहुत समझाया और अनुनय किया तो रत्नवती कहने लगी कि अम्बा जी अपना अभाग्य क्या कहूं जीने से स्त्रियों का मरना हो अच्छा है• इन में कुलाङ्गनों का जीना तो मानों बन्दी का घर है उन में मैं उदाहरण हो रही हूं मा बाप भी मेरी सुधि नहीं लेते यहां के समाचार या मेरे गुणों को पीछे कर मेरा अनादर किया मेरा जीना व्यर्थ है लाज की बात किस से कहूं क्या करूं इस प्रकार रोती गिड़ गिड़ाती उस बुढ़िए तपसिन के पैरों पर पड़ी कहने लगी मेरा जीना सफल और मुझे सोहागिन करो नहीं तो मैं आत्मघात करूंगी इसे सुन बुढ़िया कहने लगी ऐसा साहस मत कर यह मैं तन मन धन से तेरा काम करने को खड़ी हूं मुझसे जो अपना काम हुआ समझ निस्सन्देह कह यदि तू ऐसी दुखिया है तो मेरे साथ तप कर तप सब फल देता है निश्चय है कि पहले जन्म में किये भले बुरे कर्म्मों से सुख दुख होते हैं यह पूर्ब्ब जन्म के पाप का फल है क्योंकि यह तेरा आकार शील है भगवान ने उत्तम जाति और कुल में जन्म दिया पर अकारण तेरे उपर पति का द्वेष होगया इस द्वेष के हटाने का कोई उपाय हो तो कह तू चतुरी देख पड़ती है रत्नवती कुछ देर पर्य्यन्त नीचे शिर कर सोचने लगी सोच बिचार दूसरा उपाय न देख लम्बी ठंडी सांस ले बोली कि अम्बा जी बनितों को एक पति देवता है विशेष कर कुल की स्त्रियों को तो पति छोड़ दूसरी कोई गति नहीं है इस कारण उस की सेवा का कोई उपाय सोचिये यह जो मेरे पड़ोस में धनपति नाम साहुकार है जौति पांति धन धान्य कुल में मेरे ससुर से घट नहीं है राजा भी उसे मानता जानता है इस हेतु इस समय इस पुर के सब महाजनों में बढ़ाचढ़ा है उस की कन्या कनकवती रूप आकार में मेरे समान है मेरी प्रिय सखी है उस की अटारी के गच पर

मैं उस से भी दूना वस्त्र भूषण पहिन भूषित हो गेन्द खेलूंगी आप कुट्टि- नी के समान उस की मा के निकट प्रार्थना कर मेरे स्वामी को उस के घर किसी प्रकार ले आना जब सब आप लोग एकट्ठे होंगे तब मैं बहाने से खेलमें भूल कर कन्दुक को नीचे डाल दूंगी उस समय उस गेन्द को उठा कर मेरे पति के हाथ देकर कहना कि बेटा यह सब सेठों में श्रेष्ठ निधिपति की बेटी तेरी स्त्री की सहेली है यह तुझे रत्नवती के निमित्त निर्बुद्धि और निर्दय कहा करती और तेरी निन्दा करती है इस हेतु यह कन्दुक तेरे बिरोधी का पदार्थ है तू इसे जिस का है उसे देदो यदि वह इस प्रकार कहा जायगा तो निश्चय है कि शिर उठा कर मेरी ओर देखने लगेगा और पहचानने की सम्भावना नहीं है मुझे कनक- वती ही समझेगा उस काल गेन्द देने के निमित्त हाथ जोड़ प्रार्थना करूंगी और आप भी बार बार कहोगी तो सम्भव है कि गेन्द देने के निमित्त प्रसन्नता से मेरे निकट चला आवे गा गेन्द देने के समय मैं देख लूंगी इस बहाने से मिला कर मेरे ऊपर उस की प्रीति उत्पन्न कर जिस उपाय से संकेत कर मुझे दूर देश ले चले उस उपाय को किजीये तपसिन ने प्रसन्न हो कर रत्नवती के उपाय को अच्छा समझ स्वीकार किया और वैसा ही क्रिया निदान बलभद्र ने उस बुढ़िए भिक्षुकिन के छल में पड़ रत्नवती को कनकवती समझ और निश्चय कर अनेक रत्न सोना और बहुमूल्य भूषणों को एक डीबे में रख अनेक भूषणों से भूषित अपनी स्त्री रत्नवती को अन्धेरी राति में निकाल दूर देश जाने के निमित्त प्रस्थान किया प्रातः काल होते ही मा बाप आदि कुटुम्ब बेटे पतोहू को न देख अति व्याकुल हो अनेक प्रकार से सन्देह करने लगे कहने लगे कि क्या हुआ कहां गये बेटा तो रत्नवती के नाम सुनते जलता था कैसे प्रतीति हो कि दोनों साथ ही निकले कोई कहता था कि किसी चतुर शीघ्र चलने वाले मनुष्य को भेज कर पता लगाना चाहिये जो बैरी थें वे कहते थे कि रत्नवती बड़े बाप की

बेटी थी इन लोगों ने उस का बड़ा निरादर किया आन में आ कर किसी कुए में गिरी वा किसी दूसरे उपाय से आत्मघात किया कोई कहता था कि कहां की बात छिपे हो रत्नवती कहीं चली गई अपनी लाज बचाने के निमित्त लोगों ने बलभद्र को छिपा रक्खा है देखना कि थोड़े ही दिनों के बीते बलभद्र आपही प्रगट हो जायगा इस प्रकार कानो कान बात हो रही थी इतने में उस बुढ़िए तपसिन ने आ कर कहा कि एक दिन बलभद्र कहता था कि मूढ़ मैं ने निरपराध अपनी पतिव्रता कुलवन्ती स्त्री को छोड़ा ऐसे प्रतिष्ठित ससुर सासु का निरादर किया मा बाप भाई बन्धु हित मित्र का कहना न सुना अब अपने किये को पछता ता हूं एक तो ऐसा ससुराल मिलना कठिन है ससुराल मिले पर ऐसी सुशील हित के उपदेश करने वाली कामिनी बड़े भाग से मिलती है अच्छे कुलीन कहेंगे कि एक भले मानुष की कन्या का जन्म व्यर्थ किया मा बाप को जन्म भर का शूल दिया ऐसे निर्दय को कौन कन्या दे और आचार्य्य गुरु देवता के सन्मुख अग्नि की साखी दे हाथ पकड़ प्रतिज्ञा की थी कि जीते जी इस का त्याग न करूंगा इस प्रतिज्ञा को मूर्खता के कारण न माना परलोक में क्या उत्तर दूंगा जो हुआ सो हुआ दिन भर का भूला सांझ को घर आजाय तो उसे भूला न कहिये परन्तु यहां उस सितवन्ती के अर्थ रह कर जीवन बीताने में अति लज्जा आती है इस प्रकार वह सोचता था इस हेतु समझती हूं कि बलभद्र पति के सुख से सुखिनी सीतवन्ती रत्नवती के साथ कहीं चला गया है उन का पता लगाना कठिन नहीं है वे मिल जांगे आप लोग व्याकुल न हों तुरत पकड़ मगाने से लज्जा में पड़ेंगे इसे सुन बलभद्र का बाप उन के खोज करने में सिथिल हुआ बलभद्र तो पुरुष था बाहर भीतर मेले ठेले में काम पड़ने पर कोस आध कोस चलता था रत्नवती एक तो अबला दूसरे बाला बड़े साहुकार की बेटी वैसाही घर में ब्याही थी पैरों से चलने का काम उसे

कभी नहीं पड़ा था पर मनुष्य के मन की बात छोलाने से उस के निमित्त कुछ क्लेश आ जाता है तो उसे ध्यान में नहीं ले आता निदान धीरे धीरे थोड़ी दूर जा कर एक दासी रख उस के शिर पर असन बसन धर चलते चलते आखेटकपुर नाम नगर में पहुंचे वहां किराये में एक घर लेकर रहने लगे थोड़े दिनों के बीते शहर की चाल चलन समझ एक दूकान ले अपना महाजनी काम चलाया बलभद्र अपने काम में चतुर तो था ही थोड़े दिनों में अपनी जड़ जमा ली द्रव्य एकट्ठा किया उस नगर के महाजनों में प्रसिद्ध हुआ अनेक दास दासी आगये प्रसंग से बात चित करने से पहली चेरी को विदित हो गया था कि यह बलभद्र की ब्याहुती स्त्री नहीं है किसी प्रतिष्ठित पड़ोसी की कन्या कनकवती है उढ़ार कर ले आया है इस कारण अभिमान में पड़ गयी थी काम में मन नहीं देती थी कहने पर मनही मन गुन-गुनाती थी इस हेतु एक दिन रत्नवती ने कहा कि तू काम नहीं करती देखते ही देखते वस्तुओं को छिपा लेती कहने पर उत्तर देती है तुझे रहना हो पहले के समान अपने काम में सावधान रह नहीं तो अपनी राह देख चेरी सुन के बहुत बकने लगी इसे सुन बलभद्र ने उसे पीटा उसे अभिमान तो था ही कि इनका गुप्त भेद जानती हूं यदि मुझसे बोलेंगे तो इन्हें फसाऊंगी निदान क्रोध में पड़ कर अपने मन की बात प्रगट की किसी लोभी कुचाली महाजनों के चौधरी से कहा कि यह बलभद्र जिसे आप लोग अच्छा समझते हो बहुत निन्दित है किसी भले मानुष की कन्या उढ़ार कर लेआया है उसी के धन से धनी हुआ है थोड़े से धमकाने में बहुत दे देगा उस चौधरी ने बड़े बूढ़े प्रतिष्ठित सेठ साहुकारों के सन्मुख उन को धमकाता हुआ कहा कि आप लोग नहीं जानते कि यह पापी बलभद्र प्रतिष्ठित निधिपति महाजन की कन्या कनकवती को अनेक रत्न और भूषणों के साथ उढ़ार कर इस नगर में आ बसा है हम अभी कोतवाल के पास इस का भेद प्रकाश कर

राजा की आज्ञा ले इस के सर्वस्व हरन करा कर बन्दी गृह में इसे पहुचाताहूं यदि आप लोग इसमें पड़िए गा तो इस का फल भोगिए गा सब को पत समान है आज वहां से किसी की कन्या ले आया दूसरे दिन दूसरे की बेटी वा पतोहू निकाल ले जागा यदि आप लोगों के आगे सब धान बाइस पसेरी है बुरे भले का बिचार नहीं तो भले लोगों की लाज कैसे रहेगी बलभद्र तो इसे सुनतेही सूख गया काटे लोहू नही भले की अपकीर्त्ति मरने से अधिक होती है निदान उस दिन पंचायत उठ गयी बलभद्र हाय करता घर आया खाने पीने की क्या चर्चा मन मारे चिन्ता में मगन बैठा था रत्नवती देख डर गयी पूछा कि स्वामी आज आप किस चिन्ता में पड़े हो बलभद्र ने कहा कि जो जैसा करता उसे भगवान वैसाही फल देता है मैं ने जो किया उस का फल भोगना पड़ा हमारे लोगों का भंडा फुटा पाप प्रगट हुआ चौधरी ने हम लोगों का कुचाल कह दिया रत्नवती ने कहा कि स्वामी आप न डरिये निस्सन्देह कहिये कि यह चौधरी असत्यवादी है झुठमुठ भले मनुष्यों को दोहमत में डालता है हमारी घरनी निधिपति की कन्या कनकवती नही है यह बलभी में रहने वाले गृहगुप्त की बेटी रत्नवती इस का नाम है इस के बाप ने टीका काढ मुझे दिया मैं ने बेद की रीति न्याय से अग्नि की साखी दे पंचों के सम्मुख ब्याहा इस में सन्देह होतो आप लोग जाच लीजिये सहर के महाजन चाल चलन से बलभद्र को सच्चा समझते थे पर बात ऐसी थी कि एका एक चौधरी का कहना असत्य नही कह सकै एक महाजन जो बलभद्रको भली भांति जानता था उस का जामिन हुआ पंचों ने बलभी में गृहगुप्त के पास धर्म्मपत्री भेजी गृहगुप्त ने पत्री पढ़ कर दूत को पारितोषिक दिया घर पर आनन्द बधावा बजवाने लगा अन्त में दूत के साथ आखेटक पुर में पहुचा बेटी दमाद को देख सन्तुष्ट हो बड़ी सामा से उन्हें घर ले आया घर से बलभद्र के बाप के पास मधुमती में दूत भेज कर समधी को प्रसन्न किया बलभद्र के

कुटुम्ब सहित मित्रों को जो प्रसन्नता हुई वर्णन से बाहर है निदान वे घर कर बेटे पतोहू को बड़ी धूम धाम से अपने घर लेगये इसे सुन मित्र प्रसन्न हुए अब औ के मुख काले पड़े इस हेतु कहता हूं कि पति कैसा ही हो यदि स्त्री कुलवन्ती हो तो पति को प्रसन्न कर बस कर लेती है।

मनुसंहिता आदि ग्रन्थों से विदित होता है कि स्त्रियां पिता वा पिता की अनुमति पा कर भाई जिसे उन्हें देदे वह यावत् पर्य्यन्त जीता रहै तावत् पर्य्यन्त उस की सेवा करें देव बस उस के परलोक हो जाने पर पति को पर लोक में पहुच ने के निमित्त श्राद्ध तर्पण दान पुण्य करती रहैं इन्द्री सुख के निमित्त उसे छोड़ दूसरे पुरुषके मुख न देखें।

बिवाह के समय जो बेद के मन्त्र पढ़े जाते और ब्रह्मा की तृप्ति के निमित्त जो घी आदि वस्तुओं का होम होता है वह स्त्रियों के जीवन पर्य्यन्त अभिलषित वस्तु के मिलने के निमित्त किया जाता है और जो वर को दे देने के निमित्त पहले पहल वाक्यदान होता है कि यह कन्या अमुक वर को दी जायगी यह उस कन्या पर वर के अधिकार होने के निमित्त किया जाता है तात्पर्य्य यह है कि जिस दिन बिवाह के निमित्त वाक्य दान होता है उसी दिन से कन्या वर की हो जाती है काम पड़ने पर उसी दिन से उस वर की सेवा स्त्रियों को करनी चाहिये।

ऋतु वा दूसरे समय में बेद के मन्त्र पढ़ कर ब्याह करने वाला पति ही स्त्रियों को सुख का दाता होता है इस लोक में क्या तथा पर लोक में भी स्त्रियों को वही सुख देता है दूसरा नहीं।

पति अच्छी चालच लन हीन हो वा किसी दूसरी स्त्री से प्रीति रखता हो विद्या हीन गुण रहित हो परन्तु पतिव्रता स्त्रियों को चाहिये कि उसे देवता समझें और देवता के समान उसकी पूजा और आराधना करती रहैं।

किसी कारण बिधीसे ब्याही हुई एक स्त्री के न रहते दूसरी ब्याहुती

स्त्री के साथ पुरुष स्त्री के साथ सिद्ध होने वाले यज्ञादि कर्म्मों को कर सकता है परन्तु किसी कारण पति के न रहते उन कामों में स्त्रियों का अधिकार नहीं है और पति के रहते व्रत उपवासादि भी विन पति की आज्ञा स्त्रियां नहीं कर सकतीं स्वामी की आज्ञा ले कर करसकती हैं स्त्रियां जो पति की सेवा करती हैं उसी से स्वर्ग में पूजापाती हैं।

जो स्त्री पति के किये हुए धर्म्म कर्म्मों से स्वर्गादि फल चाहैं वे जीते वा मरे पति का अनादर और अप्रिय न करें मरे पति का अप्रिय निन्दित अभिप्राय से दूसरे पति के मुख देखने से और उस के निमित्त अवश्य श्राद्धादि दान पुण्य न करने से होता है।

यदि स्त्रियां उत्तम लोक चाहैं तो पति के मरजाने पर मूल फल फुल से निवाह करें देह को दुर्बल रखें व्यभिचार के अभिप्राय से दूसरे पुरुष के नाम नलें और दिन रात रोती न रहें।

यदि स्त्रियां पतिव्रता स्त्रियों के अति उत्तम धर्म्म चाहैं तो दैव वस पति के मरजाने पर मरण पर्य्यन्त क्षमा और नियम युतर हैं और इन्द्री सुख के त्याग पर जो ब्रह्मचारियों का धर्म्म है स्थिर रहैं उस का त्याग कभी न करैं।

स्त्रियों को यह सन्देह नहीं करना चाहिये कि बिना सन्तान उत्पन्न किये पति के मरजाने से बिना सन्तान उत्पन्न किये स्त्रियों की गति कैसे हो सकती है क्योंकि लड़कपन से ले कर ब्रह्म चारी के नियमों पर दृढ़ता से वर्तमान सनक सनन्दनादि लाखों ब्राह्मण उत्तम से उत्तम गति स्वर्गादि पा गये हैं उत्तम गति का कारण सन्तति नहीं है अपना धर्म्म ही है स्त्रियों का धर्म्म जीते वा मरे पति पर रहनाही है दूसरा नहीं इस कारण कहा है कि जो स्त्री स्वामी के मर जाने पर वंश उत्पन्न करने की इच्छा नहीं करती उपर कहे हुए ब्रह्मचारी के धर्म्म और नियम पर स्थिर रहती है उत्तम गति मिलने के निमित्त पुत्र की इच्छा नहीं

करती वह सनक सनन्दनादि वा वाखि ल्यादि के समान स्वर्ग में पहुंच जाती है ।

दूसरे पुरुषसे उत्पन्न सन्तान शास्त्र की रीति उस स्त्री का नहीं होता और दूसरी स्त्री में उत्पन्नसन्तति उत्पन्न करनेवाले पुरुष की नहीं होती शास्त्र में कहीं आज्ञा नहीं दी है कि पतिव्रता स्त्री दूसरा पति करे।

जो अपनी हीन जाति के पति छोड़ उत्कृष्ट जाति के पति स्वीकार करलेती है वह स्त्री संसार में निन्दा पाती है और लोग कहते हैं कि पहले इस का दूसरा पति था अब ईसने दूसरा कर लिया ।

स्त्रियां दूसरे पुरुष के साथ करने से निन्दित गिनी जाती हैंमरे पर सियारिन होती हैं और बड़े पापी कोढ़ी आदि के रोग से पीड़ित रहती हैं ।

जो मन वचन काया को बस कर मन वचन शरीर को पतिमें लगाए रहती है इन में से किसी से पति का त्याग नहीं करती वह उत्तम गती पाती है और संसार में सती पतिव्रता कहलाती है ।

मन वचन काया को बस में रखनेवाली स्त्रियों का जो पति की सेवा और दूसरे पुरुष की ओर मन वचन काया से दृष्टी न देना धर्म्म कहा है इस से वे संसार में बड़ी कीर्त्ति और परलोक में उत्तम गति पाती हैं ।

भागवत दशमस्कन्ध में कहा है कि छल छोड़ अपने ब्याहुते पति और उस के बन्धुओं की सेवा और लड़कों का पालन करना स्त्रियों का परम धर्म्म है और यह भी कहा है कि यदि स्त्रियां उत्तमगति चाहें तो पति दुराचारी हो वा कुरूप हो वा बूढ़ा हो वा मूढ़ हो वा सदा का रोगी हो वा धनहीन हो उसे कभी न छोड़े दूसरे पुरुष से जो स्त्रियों को सुख होता है वह परलोक में उत्तम गति की हानि इस संसार में अपयश करता और अनेक प्रकार के भय देखलाता है और सब जगह निन्दित कहा है ।

भागवत सप्तमस्कन्ध एगारहवें अध्याय मे नारद जी ने युधिष्ठिर महाराज से पतिव्रता का लक्षण और धर्म्म यह कहा है कि जो स्त्री पति की शुश्रुषा और उस का हित करती स्वामी के बन्धुओं की सेवा करती है और सदा पति के किये हुए नियम पर तन मन वचन से स्थिर रहती है वह पतिव्रता है और यही स्त्रियों का धर्म्म है। और यह भी कहा है कि पतिव्रता स्त्री आप वस्त्र भूषण से शोभित हो घर के बासन बर्तन को निर्मल और पवित्र कर घर को बाहर भीतर से झाड़ बुहार और लीप कर पवित्र रखती पति की छोटी बड़ी सब अभिलाष को पूरा करती और नम्र रहती इन्द्रियों को बस में रखती सत्य और प्रिय वाक्य बोलती है और कहा है कि पतिव्रता स्त्री सदा संन्तुष्ट रहती है भोग में भी लोभ का त्याग कर पति के वा घर के कामों में आलस्य नहीं करती सत्य और प्रिय बचन बोलने में सावधान हो सब कामों में सावधान और पवित्र हो चित्त को कोमल कर पति की सेवा करती है यदि पति पतित हो जाय तो यावत पर्य्यन्त वह प्रायश्चित कर पवित्र न हो तावत पर्य्यंत स्त्रियों को उसकी प्रतीक्षा करनी चाहिये प्रायश्चित्त करने के अनन्तर फिर ऊपर कही हुई रीति उस की सेवा करनी चाहिये जैसा लक्ष्मी तत्पर हो कर विष्णु की सेवा करती वैसा ही जो पति में विष्णु का भाव कर उस की सेवा करती है वह विष्णु लोक में विष्णु स्वरूप पति के साथ लक्ष्मी के सामान आनन्द करती है।

हारितने पतिव्रता का लक्षण कहा है कि जो पति के दुखी होने से दुखी होती प्रसन्न रहनेमे प्रसन्न किसी कारण प्रदेश जाने पर मैली और दुबली हो जाती उसे पतिव्रता कहिये।

जो स्त्रि पति को प्रसन्न रखती और पतिव्रता के धर्म्म पर स्थिर रहती है उस पर ईश्वर प्रसन्न हो कर संसार में सुख यश और परलोक में उत्तम गति देते हैं।

प्रसिद्ध है कि जब कर्दम मुनि को पिताने गृहस्थाश्रम स्वीकार करने की आज्ञा दी उस समय उन्हों ने सोचा कि गृहस्थी का मुख्य काम दान धर्म्म यज्ञ अभ्यागत की सेवा और सन्तति उत्पन्न करना है ये सब काम कुलीन पतिव्रता स्त्री के अधीन हैं इस कारण पतिव्रता घरनी मिलने के निमित्त सरस्वती नदी के तीर पर तपस्या और ईश्वर की आराधना करने लगे, उनकी तपस्या और आराधना से भगवान प्रसन्न हो कर प्रगट हुए कर्दममुनि देख दण्डवत् प्रणाम कर स्तुति करने लगे कहा कि अनेक जन्म योग करते करते योगी लोग आप का दर्शन कदाचित् पाते हैं वह दर्शन मुझको मिला मैं धन्य हूं मेरा जन्म सार्थक हुआ नेत्रों ने अपना फल पाया हे भगवान संसार के विषय भोगने के निमित्त जो आप के चरणारविन्द की सेवा करते हैं वे कुबुद्धि हैं, संसार का विषय भोग तो पशु पक्षी को भी मिलजाता है पर जो जिस निमित्त आप को भजता है उसे उसी कामना को देते हैं यद्यपि मैं कामना से भजने वालों की निन्दा करता हूं पर मैं भी अपनी अभिलाषा पूरी होने के निमित्त ही भजता हूं मुझे पिता ने गृहस्थाश्रम में रहने की आज्ञा दी है उसे मैं मानना चाहता हूं मुझे पतिव्रता घरनीमिले जिस से मुझे अर्थ धर्म्म और काम तीनों का लाभ हो आप का चरण सब बस्तुओं को देता है हे भगवान् मुक्ति चाहने का मेरा अधिकार नहीं है इस हेतु गृहस्थाश्रम चाहता हूं हे प्रभु आप सब से पृथक हैं इस जगत के सृजने के समय बिना सामग्री अपनी योग माया से मकरी के समान इस जगत की उत्पती पालन और नाश करते हैं इस प्रकार कर्दम मुनि को कृत स्तुति सुन कर भगवान दया दृष्टी से उन को देखते हुए मेघ के समान गम्भीर अमृत के सदृश मधुर बचन बोले कहा कि मन बचन तन से नियम कर मेरी भक्ति की है उसे मैंने जाना मेरी सेवा व्यर्थ नहीं होती प्रजा पति के पुत्र चक्रवर्त्ती राजा मनु का प्रजा पालना और समृद्धि तीनों लोकों में प्रसिद्ध है उन की राजधानी ब्रह्मावर्त्त

के भीतर है वह वहां रह कर सातों द्वीपों के साथ सब पृथिवी का पालन करते हैं आज से तीसरे दिन वह राजर्षि अपनी पट्टरानी शतरूपा के साथ तुम्हारे आश्रम पर आवेंगे और वय शील गुण युत कमलनयनी चन्द्रबदनी गजगामिनी पिकबैनी अपनी कन्या देवहूती को विवाह की विधिसे तुम्हे देंगे वह राज कन्या तुम्हारी अभिलाषा पुरी करेगी इस प्रकार कर्दम मुनि को बर दे भगवान अन्तर्ध्यान हो गये और कर्दम मुनि उस समय की प्रतीक्षा करने लगे।

निदान वह तीसरा दिन आया मनु अपनी पट्टरानी शतरूपा के साथ रत्नजड़ित रथ पर कन्याको बैठाये उस स्थान पर पहुंचे जहां कर्द्दम ऋषि के भजन से प्रसन्न हो कर भगवान ने उन्हें वर दिया था जब से उस स्थान पर भगवान का चरण पड़ा तब से उस की शोभा और की और ही हो गयी कदम्ब अशोक करंज मौलसरी आम मन्दार कटहल पलास पारिजाता अनार आदि मनोहर तरु और चंपा कुन्द बेली चमेली जाही जूही कनेली आदि सोहावनी लतों से आश्रम शोभित हो गया जलाशयों में करांकुल हंस सारस बतक कुररी जलकुक्कुट चकवा चकई आदि जल पक्षि मद से माते अनेक प्रकार की बोलियां बोलते और कल्लोलें कर रहे थे कमलों पर भौंरे गुंजते थे और अनेक प्रकार के मृग बन गाय चवरगाय अरना सुअर रीछ तन्दुआ बाघ सिंह आदि छोटे बड़े जन्तु अपना स्वभाविक बैर छोड़ एक साथ विचरते थे मनु महाराज उस बन की शोभा और बनजन्तुओं के विलक्षण स्वभाव देख प्रसन्न और चकित होते हुए कर्दम मुनि की पर्णकुटी के निकट पहुंचे उस समय कर्दम ऋषि तप करने से शरीर से अति दुर्बल हो गये थे पर तेज से सूर्य्य के समान तपते भगवान की कृपादृष्टि पड़ने और अमृतबचन सुनने से हरे भरे हो गये थे बड़े बड़े भुज कमल के समान नेत्रों से शोभित शिर पर जटा बान्धे विभूति रमाये धूलि धूसर मृगचर्म्म पर शान्त हो बैठे कैसे देख पड़ते थे मानो तुरत खानि से निकाली उत्तम मणि सान पर चढ़ाने

के पहले किसी बिचित्र विस्तरे पर रख दी गई है मुनि मनु महाराज को अपनी पत्रकुटी की ओर आते देख कर उठे नम्रता से प्रणाम करते हुए मनु महाराज के हाथ पकड़ कुटी में ले गये अर्घ पाद्य दे अगत स्वागत कर कहने लगे कि महाराज निश्चय है कि आप का चलना साधुओं की रक्षा और दुष्टों के दलन के निमित्त है आप सूर्य्य चन्द्रमा अग्नि वायु यम धर्म्म वरुण इन के रूप हो इन में से जब जिस का काम पड़ता है उस रूप को प्रगट करते हो विष्णु की पालनशक्ति आप में विराजमान है आप का आना प्रसंग बस हो सकता है क्यों कि यदि इस बड़ी सेना के साथ सूर्य्य के समान तपते मणियों से शोभित इस विजयी रथ पर चढ़ कर प्रचंड धनुष के फटकार से पापियों को धमकाते हुए इस पृथिवी मण्डल पर भ्रमण न करें तो पापी लोग वर्णाश्रम के सब सेतु तोड़ कर कुपथ पर पैर रक्खें और प्रजों को पीडा देने लगें अधर्म्म दिन दिन बढ़ने लगे और प्रजा निरंकुश हो पाप रत होजां तौ भी पूछता हूं कि किस प्रयोजन के निमित्त इस कुटी को शोभित और सफल किया है प्रसन्नता से आप की आज्ञा पालन करूंगा इस प्रकार मधुर प्रिय वचन सुन मनु जी बोले कि ब्रह्मा ने धर्म्म की रक्षा के निमित्त आप लोगों को अपने मुख से उत्पन्न किया और हम लोग क्षत्रियों को आप लोगों की रक्षा के हेतु अपने बाहों से प्रगट किया उन की आज्ञा से हम दोनों परस्पर रक्षा करते हैं महाराज आप के दर्शन से हमारा अमंगल नष्ट हुआ आपने मुझे धर्म्म सिखलाया धन्य भाग्य कि आप का दर्शन हुआ और आप के चरण रज मेरे शिर पर पड़े कृपानिधान मैं ने सुना है कि पिता की आज्ञा से आप गृहस्थाश्रम में आना चाहते हैं आप का ब्रह्मचर्य्य पुरा हुआ अब व्याह किया चाहते हैं मेरी प्रार्थना सुनिये और अंगिकार कीजिये यह मेरी कन्या देवहूति वय गुण शील युत पति चाहती है जिस दिन नारद जी ने आप के शील विद्या रूप अवस्था गुण और दया का वर्णन किया उसी दिन से उठते बैठते सोते जागते आप के ध्यान

में रत रहती है. आप के चरणों की सेवा चाहती है मैं श्रद्धा से इसे देता हूं गृहस्थी के कामों में सब प्रकार आप को सुख देगी आप के अनुरूप और अनुकूल है जो लोग त्यागी हैं किसी वस्तु की कामना नहीं रखते, वे भी आप ही आप आयी उपकारी वस्तु का त्याग नहीं करते आप तो व्याह करना चाहते हो जो लोग आप ही आयी काम की वस्तु का त्याग करते हैं काम पड़ने पर वस्तु न रहने के कारण किसी कृपण से याचते उस से अनादर पाते और अपने निर्मल यश को मैले करते हैं कर्दम ऋषि तो चाहते ही थे अपने मन की बातें सुन कहने लगे कि महाराज आप की कन्या की अभिलाषा पूरी होगी मैं वेद की विधि से व्याह करूंगा कौन अभागा विना भूषण अपने अंगो की शोभा से शोभित इस कन्या का अंगीकार नहीं करेगा सुना है कि विश्वावसु गन्धर्व आप की राजधानी के ऊपर से विमान पर चढ़ा चला जाता था यह अपनी सखी सहेलियों के साथ खेलती थी इस के नुपुरों की ध्वनी गन्धर्व के कानों में पड़ी उस की दृष्टि नीचे गिरी इस की सुन्दरता देख गन्धर्व मोहित हो विमान से गिरपड़ा मनुमहाराज की कन्या उत्तानपाद की बहन कुल गुण दोनों में प्रशंसा के योग्य है कौन इसे नहीं चाहेगा मैं इसे इस प्रतिज्ञा पर स्वीकार करता हूं कि यावत् पर्य्यन्त इसे सन्तति नहीं होगी तावत् पर्य्यन्त इस के साथ गृहस्थी में रहूंगा इस के अनन्तर सन्न्यास ले परमहंसों के नियम स्वीकार करूंगा ऐसा कह मर्दम ऋषि भगवान को हृदय में सुमिरते हुए चुप बैठे मनु अपनी रानी शतरूपा के अभिप्राय ले अपनी कन्या देवहूति को व्याह दिया उस समय गन्धर्व अपनी स्त्रियों के साथ विमान पर आ कर गाने और अप्सरा नाचने देवता फुल बरसाने लगे जो अपने धर्म्म पर रहते हैं उन का मंगल सब चाहते हैं शतरूपा ने अनेक प्रकार के वस्त्र भूषण धन धान्य बासन बर्त्तन आदि गृहस्थी की सामग्री यौतुक में दी मनुजी ने ऋषि की आज्ञा ले चलने के समय कन्या को हृदय में लगा लिया आंखों से

पानी की धारा चली सन्तती का प्रेम ऐसा ही होता है भगवान की माया प्रबल है किसी को नहीं छोड़ती इसी हेतु महात्मा लोग सर्व को छोड़ छाड़ बन में बास करते हैं निदान मनुजी अपनी राजधानी में गये देव-हूती काम दम्भ द्वेष मद मात्सर्य लोभ छोड़ सावधानी से पवित्र गम्भीर हो हित करनें इन्द्रियों को बस में रखने और मधुर वचन से महात्मा को प्रसन्न किया महर्षि कर्दमजी ने देखा कि यह तन मन वचन से मेरी सेवा करती देवतों को भी कुछ नहीं समझती मुझी से अपना अभीष्ट चाहती नियम और मेरी भक्ति करती है जो राज महलों में पलंग पर डर कर पैर रखती थी सैकड़ों दासी इस की सेवा में रहती थीं वह मेरी सेवा करती है अपने शरीर को भी कुछ नहीं समझती अती दुर्बल हो गयी है जैसा पार्व्वतीजी महादेव जीकी सेवा करती हैं वैसा ही यह मेरी सेवा करती है निदान प्रेम से गद गद बचन बोले कि हे राजपुत्री तुम्हारी सेवा और उत्कृष्ट भक्ति से मैं सन्तुष्ट हूं हे प्रिये सब से प्रिय प्राणी का देह है इसे तमने मेरी सेवा में लगाया इसे कुछ नहीं समझा पतिव्रता के धर्म्म पर स्थिर हो मैंने तप समाधि विद्या और चित्त की एगूता से भगवन को प्रसन्न किया और अनेक पुराय और स्वार्गादि लोक मुझे मिलेंगे वे सब मेरी सेवा करने से तुम्हें मिलेंगे जो तुम्हें सुख मिलेगा वह देवतों को दुर्लभ है ये संसार के विषय अति तुच्छ हैं तुम्हें अक्षय सुख मिलेगा इस प्रकार पति को प्रसन्न देख देवहुतीने अपने मन की व्यथा दूर की प्रेम से गदगद हो संकुच से शिर झुकाए स्त्री के स्वभाव के कारण मुसुकुराती हुई विनय से बोली कि स्वामी जो आप कहते हैं सत्य है परन्तु जो आपने ब्याह के समय आज्ञा दी है कि सन्तति उत्पति पर्य्यन्त इस के साथ गृहस्थाश्रममें रहूंगा उसका स्मरण कराती हूं स्वामी वह बर पुरा हो आप ऐसे स्वामी से गर्भ का लाभ स्त्रियों को परम लाभ है हे स्वामी जो आप इस समय बर देते ही यह पुत्र उत्पत्ति के अनन्तर आप की दया से मेरे यश के प्रकाश होने पर पुरा होवे हे प्रभु आप की

दाया दृष्टि बिना यह निर्दय काम दुख देता है हे स्वामी देह दुर्बल हो गया है इस हेतु गृहस्थी का सब समग्री मिलें और बिना गृह गृहिनी का काम नहीं चलता इस हेतु एक घर का समान होवे इसे सुन कर्दममुनि ने अपनी योग शक्ति से एक बिमान रचा उस में मणियों के खम्भे लगे थे सब ऋतुओं में सुखदायी था उस में सब भोग की दिव्य वस्तु रक्खी थीं वस्त्र भूषण ध्वजा पताका से भूषित कल्पवृक्ष के फुलों की मालों से अलङ्कृत था उन मालों पर भौंरे गुंजते थे अनेक प्रकार की चिड़ियां मद से मत्त हो अनेक प्रकार की मधुर बोलियों को बोलती थीं उपर के रत्न जड़ित सोनहली कलसियों पर मोर बैठे थे वह योगी के संकल्प से रचा था इस हेतु उस बिमान की शोभा कौन वर्णन कर सकता है देखते ही बन आता था उस के भीतर कहीं पलगों पर दूध के फेन के समान स्वेत तोसक और कोमल तकिया रक्खी थीं कहीं फुलों के सेज बिछे थे देवहूती उस बिमान को देख कर चकित हो गयी और अपने को उस के अयोग्य समझा क्योंकि काड़ें मैले होगये थे केशों की जटा बन्ध गयी थी देह धूलि से धूसर हो रहा था पिया के अभीप्राय जान ऋषी ने कहा हे राजपुत्री इस सरोवर में स्नान कर इस बिमान पर आ बैठो तुम्हारी इच्छा पूरी होगी इतने में सब भूषण पहिने एक सौ दस कन्या आ हाथ जोड़ कर कहने लगीं कि हम लोग आप की दासियां हैं जो आज्ञा हो करें सुगन्ध तेल उबटन लगा के जल सिर से नहवाय सब वस्त्र भूषणों से भूषित कर उस बिमान के निकट ले जाकर कहा कि यह आप के स्वामी बैठे हैं देवहूती स्वामी को प्रणाम कर बिमान पर अपनी दासियों के साथ गयी ऋषि ने आदर से साथ बैठाया उस समय देवहूती ऐसी प्रसन्न हुई जिसका वर्णन नहीं हो सकता बिमान मन के समान चलता था देवपित्र गन्धर्व की फुलवाड़ियों में इच्छा करते पहुंच जाता था उसे देख सब लोग तप सिद्धि की प्रशंसा और पतिव्रताई की बड़ाई करते थे इस प्रकार कर्दम ऋषि को देवहूती के

साथ सौ वर्ष बीते इतने में नव कन्या उत्पन्न हुईं कर्दम ऋषि सावधान हुए अपनी प्रतिज्ञा को पुरी समझ उसी स्थान पर आये जहां उन की भक्तिसे भगवानने प्रसन्न हो वर दिया था देवहूती इंगित से पति के मन की बात जानती थी और उसी के अनुसार वर्त्तती थी उस समय की मन की बात समझ कंप उठी आंखों से पानी की धारा चलीजाती थी बोली कि स्वामी आप ऐसे पति पाकर मैंने विषय भोग में समय बीताया इस दासी का किस प्रकार निबाह होगा इन कन्यों के योग्य पति मुझे ढूंढ़ना पड़ेगा मैं स्त्री हूं यह स्त्रियोंका काम नही है वे न होतीं मैं एकान्त में बैठ दिन राति आप के चरणों के ध्यान में जीवनबिताती मुझे एक पुत्र मिले जो आप के अनन्तर मेरे शोक को दूर करे मैं इतने दिन इन्द्रियों के भोग में ही पड़ी थी समय जाते न जाना आप के चरणों के मिलने का उपाय नहीं पूछा है स्वामी साधुओं का साथ किसी प्रकार हो यह संसार बंधन काटने को निश्चित चोखी तलवार है मनुष्य का देह पा जो धर्म और विराग का उपाय न किया वह मरे के समान है इस प्रकार कहती और गिड़गिड़ाती अपने स्वामी के चरणों पर गिरी ऋषि उठा कहने लगे तुम्हारी समान पुण्यात्मा और पति-वृता स्त्रियां बहुत थोड़ी हैं स्त्रियों का जप तप यज्ञ योग ध्यान पति की सेवा और उस की आज्ञा के अनुसार चलना है तुम्हे किसी बात की चिन्ता नहीं करनीं चाहिये तुम्हारे गर्भ में साक्षात् ईश्वर का अंश पुत्र है समय पा उत्पन्न होगा काल की प्रतिचा करो तुम्हारी कीर्ति प्रसिद्ध और तुम्हें ज्ञान का उपदेश करेगा उस से तुम इस संसार को असार समझ ईश्वर के समीप पहुंचोगी निदान सरस्वती के तट पर सब देवता पितर ऋषि आये कर्दम ऋषि से कहने लगे आपने छल छोड़ ईश्वर की आराधना की संसार में यश का विस्तार किया भगवान की आज्ञा की अब इन कन्यों को महर्षियों को दे दीजिये कर्दम जी ने मरीचि अत्री अंगिरा पुलस्त्य पुलह क्रतु भृगु वशिष्ट अथर्वा इन नव महर्षियों को क्रम

से कला अनुसूया हविर्भू गति क्रिया ख्याति अरुन्धती शान्ति इन कन्यों को व्याह दिया ऋषि लोग अपने अपने आश्रम पर गये थोड़े दिन बीते देवहूती के गर्भ से भगवान कपिल जीने अवतार लिया आकाश में बाजा बजने गन्धर्व गाने अप्सरा नाचने देवता फूल बरसाने लगे सब दिशा निर्मल हो गयीं साधुओं का मन प्रसन्न हो गया कर्दम ऋषिने एकान्त में भगवान की स्तुती कर कहा हे भगवान भक्तोंके उद्धार के निमित्त आपका अवतार है मेरे ऊपर अनुग्रह किया अब मैं चाहता हूं कि किसी एकान्त स्थानमें बैठ आप के चरणोंका ध्यान करूं। कपिल जीने आज्ञा दी कर्दम जीने घरसे निकलने के समय देवहूति की रोते देख कहा कि अब तुम को किसी बात की चिन्ता नहीं करनी चाहिये यह साक्षात् ईश्वर का अंश कपिल जी पतिव्रताई से प्रसन्न हो तुम्हारे गर्भ से प्रगट हुए हैं तुम्हें ज्ञान का उपदेश करेंगे देवहूति पति की आज्ञा मान प्रणाम कर पुत्र कपिल जी के साथ उसी स्थान पर रहने लगी कर्दम जी सन्न्यासी हो भगवान के ध्यान में लगे देवहूति कपिल जी से ज्ञान का उपदेश पा उत्तम गति की पहुंची इस हेतु कहता हूं कि जो स्त्री पति की आज्ञा मानती उसकी सेवा करती और उसे देवता समझती है वह इस लोक में सुख भोग परलोक में उत्तम गति पाती है।

यदि पति स्त्रियों को अपने बस रखना चाहें तो स्त्रियों को पतिपर अप्रसन्न नहीं होना चाहिये क्योंकि मनुसंहिता के ९वें अध्याय में कहा है कि पुरुषों को चाहिये कि दिन राति कभी स्त्रियों को स्वतन्त्र नहीं रहने दे यदि देखें कि संसार के विषयों में आसक्त होती है तो उसे अपने बस में रखें लड़कपन में पिता युवतीपन में पति बुढ़ापे में लड़के स्त्रियों की रक्षा करें स्त्रियां कभी स्वतन्त्र रहने के योग्य नहीं हैं। बिगड़ने के थोड़े से थोड़े कारणों से भी स्त्रियों को बचाना चाहिये क्योंकि ये अनिष्ट कामों से न रोकी जाँ तो पिता पति दोनों के कुल को शोक में डाल देती हैं।

ऊपर के सब धर्म्म सब वर्णों के निमित्त कहे हैं इस कारण दुर्बल

उस ने अपनी सन्तति अच्छे लोगों की चलन कुल अपने और अपने धर्म्म को बचाया ।

जैसी स्त्री रहती वैसा ही लड़का उत्पन्न होता है इस हेतु अच्छी सन्तति उत्पन्न होने के निमित्त बल से स्त्रीयों को निन्दित काम से रोकना चाहिये ।

स्त्रियों को निन्दित काम से बचने और बचाने का यह उपाय कहा है कि धन के बचाने और खरच करने में घर के पदार्थों को पवित्र रखने स्वामी और अग्नि आदि की सेवा खाने पीने की वस्तुओं को सिद्ध करने और घर की सामग्री पलंग आसन बासन को देखने और बना रखने का काम इन को करते रहना चाहिये और इन कामों में इन को लगा रखना चाहिये ।

निन्दित कामों से बचने और बचाने का उपाय कहा पर यथार्थ में यदि ये अपने को निन्दित काम से बचाना न चाहें तो कोई किसी उपाय से स्त्रियों को बचा नहीं सकता यदि ये इस लोक में निन्दा अनेक प्रकार के दुख और परलोक में यम की यातना से डरें तो ये अपने को आप बचा सकती हैं ।

मदिरा पीना निन्दित मनुष्य के साथ पति का वियोग इधर उधर घूमना असमय में सोना दूसरे के घर वास करना ये काम स्त्रियों को निन्दित काम में लेजाने के हेतु हैं यदि कोई अनिष्ट काम से बचाना चाहे तो स्त्रियों को इन कामों को न करने दे और ये अपने को आप बचना चाहें तो इन कामों को कभी न करें ।

स्त्रियां न रूप देखतीं न अवस्था का आदर करतीं पुरुष सुरूप वा कुरूप हो उस से अपना भोग चाहती हैं बड़ी सावधानी से स्त्रियों को कुचाल से बचावें। पर पुरुष देखने से भोग की इच्छा चित्त की चञ्चलता और प्रेम का अभाव स्त्रियों का स्वभाव है इस हेतु ये निन्दित काम से रोकने पर पुरुष से विरोध करती हैं ब्रह्माने सृष्ट करने के समय

स्त्रियों को इस स्वभाव को देदिया इस हेतु जो इन को निन्दित कामों से बचाना चाहें तो सावधानी से इन की रक्षा करें और ये अपने को निन्दित कामों से बचाना चाहैं तो अपने स्वभाव पर दृष्टि रक्खें और निन्दित कामों से डरती रहें।

बैठने सोने की टेव और अलङ्कार बनाना काम क्रोध कुटिलता हिंसा और कुकर्म स्त्रियों का स्वभाव है इस कारण स्वभाव से ये निन्दित काम में लगजाती हैं इस से इन को बचाने में सावधानी रखनी चाहिये और ये स्वयं सावधान रहें।

जो मनुसंहिता में स्त्रियों का स्वभाव कहा है यह उन को निन्दित काम से बचाने और सावधानी से रक्षा के निमित्त कहा है इस से यह नहीं समझना चाहिये कि सर्वथा ये निन्दा और त्याग के योग्य हैं क्योंकि कहा है कि अच्छी स्त्रियां अनेक कल्याण के भाजन सन्तति के हेतु पूजा के पात्र और लक्ष्मी के समान घर की शोभा हैं लक्ष्मी और स्त्रियों में कोई विशेष नहीं है यह प्रत्यक्ष है कि सन्तति की उत्पत्ति उत्पत्ति के अनन्तर उस की रक्षा और अभ्यागत हित मित्र और कुटुम्ब आदि का भोजन आदि संसार का काम स्त्री के विना नहीं हो सकता।

यदि स्त्रियां अपने को निन्दित काम से बचना चाहें तो स्वामी वा स्वामी के अभाव में जिस के अधीन रहने को कहा है उस की आज्ञा बिना घर के बाहर न होवें और आज्ञा मिलने पर बाहर निकलने के समय चादर का त्याग न करें न शीघ्र चलें शरीर को प्रगट न करें सिर से पैर पर्य्यन्त वस्त्र से ढांपे रहें मुख खोल कर कभी न हंसें स्वामी वा उस के बन्धुओं से हंसन करें वेश्या कुटनी पुंश्चली सन्यासिन नटिन निन्दित स्वभाव और कलही स्त्री इन में से किसी का साथ न करें इन के साथ बात चीत बैठना उठना आदि किसी प्रकार का संग होने से ये स्त्रियों को अपने समान और नष्ट कर देती हैं।

ऊपर जिन स्त्रियों के संग की हानिका हेतु कहा है उन में वेश्या आदि का स्वभाव सब लोगों को विदित है इस कारण अच्छी स्त्रियां इन का साथ नहीं करतीं पर जो सन्न्यासिन आदि साधुन के आकार बनाये रहती हैं उन पर लोगों का विश्वास रहता है समझती हैं कि साधुन हैं इस से हानि न होगी पर ये अच्छी चाल चलन की स्त्रियों को भी छल कर निन्दित पथ पर ले जाती हैं ।

सुर सेन देश में मथुरानाम पुरी है वहां किसी कुलीन का लड़का स्वभाव से चतुर था मा बापके प्रयत्न से सकल विद्या में निपुण हुआ पर कुचालियों के संग होने से कुचाल में पड़ कर जो कुछ घर में पाता था अपने मित्रों के साथ निन्दित काम में लगाता था और अपने साथियों के निमित्त अच्छे लोगों के साथ अनेक प्रकार के कलह उठाताथा इस हेतु उसे कलहकंटक कहने लगे निदान उस के मा बाप ने उसे घर से बाहर कर दिया वह एक दिन चौहट्टे पर किसी तमोली के दुकान पर बैठा था इतने में उस पथ से एक पथिक आ निकला उस के हाथ में एक चित्र पट देखा उस में बड़ी चतुरता से एक युवती का चित्र निकाला था उसे देख कलहकंटक का चित्त चकित हुआ कहनेलगा भाई यह विरुद्ध देख पड़ता है कुलांगना की ऐसी मन मोहनी मूर्त्ति न आखों देखी न कानों से सुनी इस की नम्रता और सुशीलता प्रतिष्ठित कुल में उत्पत्ति बताती है इस की मुख छबी पीली है इस के शरीर से विदित होता है कि यह भोग से बची है दृष्टि और प्रौढता बताती हैं कि प्रोषितभर्तृका नही है क्योंकि याज्ञवल्क्यजी ने कहा है कि प्रोषितभर्तृका को अर्थात् जिस स्त्रि का पति विदेश हो कन्दुक आदि से क्रीड़ा उबटन आदि से शरीर को निर्म्मल करना जन समूह और विवाहादि उत्सव देखना हंसना दूसरे के घर जाना नहीं चाहिये मित्र इस के लक्षणों से विदित होता है कि यह किसी बूढे बनिया की वनिता है तुमने जैसी देखी वड़ी चतुरता से वैसा ही लिख ली उस पथिक ने इस की बुद्धि की प्रशंसा कर

कहा कि सच कहते हो अवन्ती पुरी उज्जयनी में अनन्तकीर्त्ति नाम वंश हीन धनी सेठ है उसी की यह घरनी है रूपवती इस का नाम है जैसा इसका नाम है वैसा ही रूप है इसकी सुन्दरता देख जैसी देख पड़ी वैसा ही लिख ली कलहकंटक रूपवती के रूप से मोहित हो अघोरी बन उज्जयनी में गया भीख के बहाने से अनन्तकीर्त्ति के घर पहुंचा रूपवती को देख सोच विचार पुरवासियों की आज्ञा ले मसान पर कुटी बना रहने लगा और अपने को सिद्ध प्रसिद्ध किया पढ़े लिखे थाही उस पर लोगों का विश्वास हुआ वहां मृतक पिछे एक टका बन्ध गया कभी कभी बूढ़े और धनिक के मृतक आने से अधिक भी मिल जाता था जो कुछ पाता था उस से एक साधुन को प्रसन्न किया वह रूपवती के पास जा अनेक प्रकार की बात बनाने और कहने लगी कि स्त्रियों का यौवन चंचल है जाता जान नहीं पड़ता तुम्हारा पति बूढ़ा है रूपवती उसे धमकाने लगी कहा अरे पापिन कुलांगनों का यह धर्म नहीं है मैं पतिव्रता हूं पतिव्रतों का पति देवता है भगवान जिसको जो दे उसी से सन्तोष रखना चाहिये यह मेरा धर्म नहीं है कि अपने स्वामी से छल कर निन्दित पथ पर पैर रक्खूं स्वामी मेरा पोषण पालन करता है कुलांगना का यह धर्म है कि घर के काम काज में चतुरी हो पति को प्राण के समान समझे और पतिव्रत धर्म पर दृढ़ रहे जिस स्त्री से पति प्रसन्न नहीं रहता वह निन्दित स्त्री गिनी जाती है जिस से पति प्रसन्न रहता उस के उपर सब देवता प्रसन्न रहते और उसकी अभिलाषा पुरी करते हैं आज से फिर तू मेरे घर न आना देखने में साधुन जान पड़ती पर तू कुटनी है इस प्रकार उस को झिटकार दिया साधुनने निरास हो कलहकंटक से सब वृतान्त ज्यों का त्यों कहा कलहकंटकने कहा कि मा एक बार फिर रूपवती के पास जा कर मैं जो कहती हूं उसे चतुराईसे समझा कर कहो। संसारमें अनेक दुख हैं सदा जनना मरना लगा रहता है इस दुखको देख मैंने गुरुकीसेवाकी गुरुजी प्रसन्न हुए मुझे योग

सिखलाया अब मैं मुक्तिके पथ पर हूं योग सिद्ध हो गया मुझे भूत भविष्यत वर्तमन सा है सब जानती हूं मुझे यह संसार असार देख पड़ता है यह कैसे हो सकता है कि मैं कुल स्त्रीके धर्म्म छोड़ानेका प्रयत्न करूं मैं साधुन हूं पर का उपकार करना साधु का स्वभाव है ऐसी सम्पति मनोहर रूप और तुम्हारी अवस्था देख और पति को बूढ़ा और रोगी जान मुझे दया हुई इस हेतु मैंने चाहा कि उपाय करू मन्त्र तंत्र से अघटित वस्तु का घटना हो जाय. ऐ पर यह संदेह था कि स्वभाविक जो स्त्रियों के दोष कहे हैं उनसे यह बची है वा उन दोषोंका य भी भाजन है क्योंकि कहा है कि न दान से न मान से न सिधाईसे न शस्त्र से न शास्त्र से स्त्रियां बस में रहतीं इन को बस में रखना बहुत कठिन है गुणी यशस्वी सुन्दर धनी और युवा पति छोड़ अधम गुण हीन दूसरे पुरुष के निकट चली जाती हैं और कभी कभी कुरूप से भी हैं इस हेतु तुम्हारी परीक्षा की है उपर निन्दित स्त्रियों का स्वभाव कहा है तुम अच्छे कुल में जन्मी प्रतिष्ठित कुल में ब्याही गयी तुझ में स्वभाविक निन्दित स्वभाव नही आ सकते तुम पतिव्रता हो पतिव्रता का यह स्वभाव कहा है कि पति के मुख से गाली सुनती क्रोध की आंख से देखी जाती परन्तु पति से हंस के बोलती और सदा प्रसन्न रहती है वही स्त्री धर्म भागी होती है तुम धन्य हो क्योंकि कहा है कि नगर में हो वा बन में हो वा पापी हो वा धर्म्मी हो किसी प्रकार का हो जिन स्त्रियों को पति प्रिय हो उन को उत्तम गति मिलती है और भी कहा है कि भूषण हो वा न हो स्त्रियों का पति ही परम भूषण है अनेक प्रकार के भूषण पहने हों पर स्वमी के बिना सुन्दर भी स्त्रियां कुरूप जान पड़ती हैं जो स्त्री तन मन बचन से भर्त्ता के साथ रहती है वह जीतने देह में रोंगटे रहते हैं उतने वर्ष स्वर्ग में वास करती हैं जैसा नट मन्त्र वा जड़ों के बल सांप को बिल से बाहर कर देते हैं वैसे ही पतिव्रता स्त्री पापी पति को नरक से निकाल कर स्वर्ग में ले जाती है मैं तुम पर बहुत प्रसन्न हूं अब मैं चाह-

ती हूं कि तुम्हारी गोदी में बालक खेले पर तुम्हारा स्वामी रोगी हो गया पहले इस का उपाय होना चाहिये मुझे एक सिद्ध मिले हैं वे अपने को छिपाए रहते हैं ग्राम वा नगर में नहीं जाते पर प्रार्थना करने से हमारी बात मानेंगे तुम्हारे लिये मैं कहूंगी फिर दूसरे दिन जा कर कहना कि सिद्ध ने कहा है कि अमावास्या को थोड़ी रात बीते वह पतिव्रता अपनी बाटिका में रहे मैं वहां पहुंचूंगा होम कर उस के बायें पैर में एक यन्त्र बाध दूंगा उस पैर से छुते ही पति युवा हो जायगा अपनी स्त्री को प्राण के समान मानने लगेगा निदान रूपवती उस साधुन के छल में पड़ अमावास्या की रात पहुंचते ही होम की सामग्री ले कर अपनी बाटिका में पहुची कलहकंटक जटा बान्धे बिभूति रमाये पहले से बैठा था झुठ मुठ होम कर इसारा किया रूपवती डरती डरती अपना पैर निकाला कलहकंटक उस पैर के नुपुर ले उस के जंघे में चक्कु मार भागा रूपवती व्याकुल हो भागी घर आ कर घाव धो अपने किये को मन ही मन पछताने लगी और रोती थी कलहकंटक पता लगा रहा था जिस दिन अनन्तकीर्त्ति के घर पर सब साहुकारों की मंडली जमी उस दिन उस नुपुर को ले कर अनन्तकीर्त्ति के घर जा कर कहा कि इस नुपुर को लीजिये यह आप के योग्य है मुझे इस के उचित मूल्य दीजिये मेरी कुटी पर साधु आ गये हैं उन की सेवा करनी है अनन्तकीर्त्ति ने नुपुर देखते ही पहचाना उसे ले भीतर गया रूपवती से कहा कि अपने पैरों के नुपुर दो एक मित्र देखना चाहता है रूपवती ने हेर फेर किया जब उस बूढ़े ने धमकाया तो कहा कि मैं एक दिन फुलवाड़ी में गई थी वहां एक पैर का भूल गया मैंने बहुत ढूंढ़ा न मिला दूसरा यह है बूढ़ा सोचता विचारता बाहर आया कलहकंटक से पूछा कि तू यह नुपुर कहां पाया उस ने कहा कि यह सब जानते हैं कि मैं मरघट पर रहता हूं जो कुछ मिल जाता उस से निर्बाह करता साधु सन्त की सेवा में रहता हूं बहुतेरे कपण मेरे भय से राति

के मृतक जराने लगते हैं इस हेतु मैं सारी रात्रि जागता रहता हूं एक दिन रात्रि के काली डेरावनी मूर्त्ति एक डाकिन चा कर चिते पर से अधजरे मुरदे को घसीट ले चली मैं देख छुरी ले दौड़ा वह मेरे ऊपर मुंह फार कर चली मैं भला वैसी राण से कहा डरता हूं बड़े बड़े पीशाच ब्रह्मराचसों को तो बात की बात में बस कर लेता हूं गुरु के नाम ले मन्त्र पढ़ा वह भागी मैंने पिछा किया चाहा कि इसे पकड़ रक्खूं आप लोगों को मन्त्र का प्रभाव देखलाऊं पहुंच कर उस के पैर पकड़ा वह तो डाकिन ही थी वायू हो गयी उस का यह नुपुर मेरे हाथ में आ गया मैंने उस के जंघे में छुरी मारी इस से वह अधिक डर कर भागी मैंने समझा कि यह उत्तम भूषण सेठ साहुकारों के घर भी न होगा पर मेरे काम का नहीं है इस हेतु आप के पास ले आया हूं अनन्तकीर्त्तिने दूसरे नुपुर से मिलाया और रूपवती के जंघे में घाव देखा इस से दृढ़ निश्चय कर लिया कि यह नुपुर रूपवती का है निदान सबों ने कहा कि रूपवती रखने के योग्य नहीं है यह डाकिनी वा कुचाली स्त्री है गृहस्थ के काम की नहीं है इसे रखने से निन्दा होगी निदान रूपवती निकाल दी गयी रूपवती ने चाहा कि मसाम पर जा कर जरती चिता पर गिरूं और भस्म हो जाऊं वा फांसी लगा कर मरूं अन्त में मरघट पर पहुंची कलहकंटक इस का राह देख रहा था उसे निश्चय था कि रूपवती प्राणत्याग करने के निमित्त अवश्य इस मरघट पर पहुंचेगी फिर मैं देख लूंगा निदान वैसा ही हुआ रूपवती के पैरों पर गिरा कहने लगा कि मैं तुम्हारा दास हो कर रहूंगा तुम्हारे मिलने के निमित्त सब उपाय किया है अन्त में रूपवती को अपने कपट से बस किया इस हेतु कहता हूं कि साधुन सन्यासिनों को गृहस्थ अपने घर में न घूसने दें और उन पर विश्वास न करें और कुलांगनों को चाहिये कि उन से डरती रहें ।

मनुसंहिता में कहा है कि भोजन आच्छादने के निमित्त अन्न द्रव्य

दे कर कार्य्य बस पति विदेश चला जा तो स्त्रियों को चाहिये कि इन्द्रियों को बस कर प्रोषित भर्तृका के नियम पर स्थिर हो अपने घर में वर्त्तमान रहैं यदि दरिद्रता वा किसी दूसरे कारण खाने पहिन्ने को अन्न वस्त्र न दे चला जा तो सूत कात कर वा ऐसे किसी दूसरे कामों से जीवन का निर्वाह करें ।

गुरु की आज्ञा वा किसी दूसरे धर्म्म के निमित्त पति परदेश चला जा तो स्त्री आठ वर्ष पर्य्यन्त यदि विद्या पढ़ने के वा विद्या से यश आदि के लाभ के अर्थ जा तो छ वर्ष पर्य्यन्त दूसरी स्त्री के भोग के निमित्त जा तो तीन वर्ष पर्य्यन्त राह देखे इस के अनन्तर उसी अपने पति के निकट पहुंचे ।

मनुसंहिता में कहा है कि यदि स्त्री पति से द्वेष रखती हो तो एक वर्ष पर्य्यन्त पति उस की प्रतीक्षा करे इस के बीच यदि द्वेष छोड़ उस पति की शुश्रुषा करने लगे तो पति उस स्त्री का साथ करे यदि वर्ष के अनन्तर द्वेष करती जा तो जो कुछ उसे धन वा अलंकार दिया हो उसे छीन ले केवल खाने पहिन्ने को दे उस का साथ न करे इस हेतु स्त्रियों को चाहिये कि पति से कभी द्वेष न करें ।

जो स्त्री जूआ आदि निन्दित काम में आशक्त हो जाने के कारण अपने उचित काम में प्रमाद करने वाले वा मदिरा आदि मतवाला करने वाली वस्तुओं के पीने खाने से माते वा रोगी पति की सेवा नहीं करती उसे तीन मास पर्य्यन्त भूषण और पलंग आदि सुख की वस्तु नहीं देना चाहिये और उस का साथ भी नहीं करना चाहिये ।

जो स्त्री मदिरा पीती हो वा निन्दित काम करती हो वा भर्ता से बि-रोध रखती हो वा कुष्ठादि रोग से रोगी हो वा दास दासी वा सन्तती को व्यर्थ दण्ड देती हो वा व्यर्थ व्यय करती हो तो पुरुष को चाहिये कि उस स्त्री के रहते दूसरा ब्याह करे ।

जो स्त्री बांझ हो उस के ऋतु काल से आठ वर्ष पर्य्यन्त प्रतीक्षा

करे इसके अनन्तर दूसरा ब्याह करे जिस की सन्तति मरती जा उस की दश वर्ष प्रतीक्षा करे जिस की केवल कन्या ही होती हों उस की एगारह वर्ष पर्य्यन्त प्रतीक्षा करे इस के अनन्तर दूसरा ब्याह करे और जो अप्रिय बोलती हो उस की उसी समय त्याग कर दूसरा ब्याह करे।

जो स्त्री रोगी हो पर स्वामी की आज्ञा मानती और सुशील हो तो दान मान से उसे प्रसन्न कर उस की आज्ञा ले कर दूसरा ब्याह करना चाहिये उस का अनादर कभी नहीं करना चाहिये।

जिस स्त्री के ऊपर दूसरा ब्याह किया जाता है यदि वह अप्रसन्न हो कर घर से बाहर होना चाहे तो पति को चाहिये कि यावत् पर्य्यन्त उस का कोप न जा तावत् पर्य्यन्त उसे बान्ध कर घर में रक्खे अथवा कुल के लोगों को एकट्ठे कर उस का त्याग करे। कुल स्त्री को चाहिये कि पति को ऐसा प्रसन्न रखे कि वह दूसरा ब्याह न करे दूसरे ब्याह करने से स्वाभाविक सौति डाह उत्पन्न होता है इस से स्त्री और पति दोनों दुख भोगते हैं यदि कारण वश पति दूसरा ब्याह कर ले तो सावधानी से ऐसा निवाहना चाहिये कि न आप दुख भोगे न पति को क्लेश हो नहीं तो चित्रकेतु राजा की रानियों के समान स्त्रियों को संसार में निन्दा दुख और परलोक में पाप भोगना पड़ता है।

सुरसेन देश में चित्रकेतु नाम राजा था उस के समय में पृथिवी कामधेनु के समान प्रजों की अभिलाषा पुरी करती थी उस को संतति नहीं होती थी इस हेतु उसे अनेक ब्याह करना पड़ा पर किसी स्त्री को लड़का न हुआ भगवान ने उस राजा को मनोहर रूप उदारता स्वभाव तरुणाई उत्तम कुल में जन्म श्रेष्ट विद्या ऐश्वर्य्य और सब प्रकार के गुण दिया था पर उसे सन्तति न थी इस हेतु उसे ये सब व्यर्थ विदित होते थे इसी हेतु राज पाट में उस का मन नहीं लगता था कहता कि ऐसा सुख सब रहित

इतना बड़ा राज्य सन्तति उत्पन्न करने की शक्ति और ऐसी रूप गुण युत अनेक रानियां मिलीं, परन्तु दुर्भाग्य वस सर्व की सब बांझ हैं इन में किसी की सन्तान का योग नहीं सब बांझ मेरे ही गले मढ़ी गयीं राजा इस प्रकार की चिन्ता में मगन था इतने में अंगिरा ऋषि घुमते घुमते उस राजा के निकट अचानक आ पड़े उन को दूर से देखं उठ आगे जा साष्टांग दण्डवत कर घर ले आया अर्घ पाद्य दे आगत स्वागत कर पवित्र आसन पर बैठाया ऋषि की आज्ञा पा आप भी सावधानी और नम्रता से एक आसन पर बैठ गया ऋषि ने पूछा कि महाराज आप और आप के मन्त्री दास दासी सेना सेनापति सब प्रजा कुशल और सुखी हैं जो राजा कारवारी मन्त्री किला भंडार और मित्रों की भली भांती रक्षा करता है वह सुख से राज करता है और जिस राजा का मन बस में रहता है उस की रानियां प्रजा कारवारी मन्त्री दास दासी सेना सेनापति पुरवासी देश निवासी देशाधिकारी आदि सब प्रजा बस में रहती हैं इन के बस में रहने से देश प्रदेश के सब राजे रजवारे मन को बस में रखने वाले राजा के मुंह जोहते भेंट रखते और भय खाते हैं मैं देखता हूं कि चिन्ता से आप का मुख काला पड़ गया है इस हेतु जानता हूं कि कोई न कोई आप की अभिलाषित वस्तु नहीं सिद्ध हुई इसे सुन राजा नम्रता से हाथ जोड़ बोला हे प्रभु आप को क्या नहीं विदित है आप को सब भूत भविष्य वर्त्तमान सा है तप और समाधि करते करते ज्ञान के प्रकास हो जाने से अज्ञान अन्धकार का पता नहीं लगता महाराज आप सब अन्तः करण की बात जानते हैं कहने की आवश्यकता नहीं है परन्तु आज्ञा दी जाती है इस हेतु अपनी चिन्ता का हेतु कहता हूं हे महाराज मुझे भगवान ने ऐसी राज सम्पति दी है इसे देख लोकपाल भी सिहाते हैं पर यह अन्न के भुखे पानी के प्यासे को चन्दन माला भूषण आदि सुख और शोभा की वस्तुओं के समान मुझे नहीं

सोहाती न सुख देती मुझे कितनी रानियां हैं पर किसी को सन्तति नहीं हुई इस चिन्ता में मगन रहता हूं आप मेरे ऊपर दया दृष्टी किजीये जिस से मैं और मेरे पुरषा नरक में न पड़ें इसे सुन ऋषि सोच विचार राजा से यज्ञ करवा कर उस का प्रसाद सदा रानी की आज्ञा और सेवा करनेवाली कृतद्युति नाम ज्येष्ठी रानी को दिया और राजा से कहा कि तुम्हें एक लड़का होगा उस से तुम्हें पहले हर्ष कितने दिन बीते शोक होगा निदान रानी का पैर भारी हुआ दसवें महीने लड़का हुआ सुन कर राजा प्रजा को जो हर्ष हुआ उसे कौन वर्णन कर सकता है राजा ने पवित्र हो लड़के होने के निमित्त जातक कर्म्म किया दान दिया ब्राह्मणों से आशिर्वाद लिया उन्हें सोना चान्दी वस्त्र भूषण भूमि हाथी घोड़े और लाखों गौ दिया और दूसरे याचकों पर भी मेघ के समान धन बरसा लड़का चन्द्रमा की कला के समान दिन दिन बढ़ने लगा मा बाप दास दासी सब को परमह्लाद का हेतु हुआ जैसा दरिद्र को एका एक धन मिलने से उस में उस की प्रीति बढ़ती जाती है वैसा ही उस लड़के में राजा रानी का प्रेम बढ़ता जाता था जब से लड़का हुआ तब से लड़के के दुलार के निमित्त राजा कृतद्युति के घर में अधिक रहने लगा इस हेतु दूसरी रानियां डाह करतीं अपने को निन्दित और पापिन समझती थीं एक तो उन को सन्तति नहीं दूसरे राजा का अनादर होने लगा इस हेतु कहती थीं कि पापिन बांझों को धृकार है हम लोग ऐसी अभागिन हैं कि पति भी हम लोगों का अनादर करता है और निन्दित समझता है लड़केवाली सौतिया बांझों को दासी के समान समझती हैं दासियों को क्या सन्ताप है सेवा के अनुसार आदर पाती हैं हम लोग दासियों के समान भी नहीं समझी जातीं स्त्रियों का हृदय स्वभाव से कठिन होता है लोक में अपयश परलोक में नरक का भय उन को नहीं रहता कृतद्युति के डाह और राजा के

अनादर के कारण लड़के को विष दे दिया कृतद्युति सौतियों के इस बड़े पाप को नहीं जानती थी समझती थी कि लड़का सोता है इस हेतु किसी काम में लगी थी निदान बहुत देर के अनन्तर धाय को कहा कि लड़के को ले लो धाय पलने के निकट जा लड़के की आंखों को उलटी देख मूर्छा खा कर काटे पेड़ के समान गिरी थोड़ी देर के अनन्तर उठ हाथों से छाती पीटती शिर धुनती बड़ी करुना से रोने लगी उस का विलाप सुन रानी दौड़ कर लड़के के निकट पहुंची अचानक लड़के को मरा देख पृथिवी पर अति शोक के कारण मूर्छित हो कर गिर पड़ी केशो की गांठ खुली जाती थी वस्त्र सिर से गिरा जाता था तनमन की कुछ सुध न थी उन दोनों के रोना सुन सब महल की स्त्रियां दौड़ीं उन का भी वही दशा हुई वे विष देनेवाली पापिन रानियां भी झूट मूठ रोने लगीं स्त्रियों का चरित्र पुरुष का भाग्य कौन जानता है राजा लड़के को मरा सुन गिरते पड़ते मरे लड़के के समीप पहुंचा बार बार मूर्छित हो जाता आंसु के रोकने से लम्बी सांस लेता था बोल नहीं सकता था इस प्रकार शोक में पड़े पति को देख वह पतिव्रता कृतद्युती कुररी के समान विलाप करने लगी आंखों से आंजन युत कालेपानी की धारा चली जाती थी शरीर काला होता जाता था केश खुल गये थे इधर उधर फुल गिरते थे कहने लगी विधाता तू अति मूढ़ है तू अपनी सृष्टि में क्रम नहीं रक्खा बालक मरैं बूढ़े जीते रहें तू अति क्रूर है तूने सृष्टि के बढ़ने के निमित्त स्नेह जाल रच कर उसे आप ही काटता है हे पुत्र तू मुझ दीन अनाथ अबला को छोड़ चला गया यह उचित नहीं है पुत्र शोक की ज्वाला में जलते अपने पिता को देखो हम लोग समझते थे कि पापी हैं तुम्हारे जन्म के अनन्तर आशा हुई कि यह लड़का हम लोगों को नरक से बचावेगा पर निर्दय यमने हम लोगों से पहले तुम्हे अति दूर ले गया है नृपनन्दन देखो ये तुम्हारे साथी लड़के खेलने के निमित्त

बुलाते हैं बड़ी देर से सोते हो उठो भूखे प्यासे हो दूध पी कर साथियों के साथ खेलो हम लोगों के शोक दूर करो हा पुत्र अभागिन मैंने खिलखिलाते तुम्हारे मुख को नहीं देखा है पुत्र मुझे छोड़ दूसरे लोक में गयो निर्दय विधाता ने ले लिया अब तुम्हारे तोतर बचन कैसे सुन पड़ेगा इस प्रकार रानी का बिलाप सुन राजा अधिक शोक में पड़ा धैर्य्य छुट गया कण्ठ खोल पुका पारें रोने लगा राजा रानी के बिलाप सुन क्या स्त्री क्या पुरुष सब के सब रोने लगे उस समय राजा का अन्त: पुर करुणा का अन्त: पुर हुआ उन लोगों का बिलाप सुन पशु पक्षियों का भी हृदय दाड़िम सा दरकता जाता था इतने में नारद और अंगिरा ऋषि पहुंचे शोक सागर में डूबते मृतक के निकट मरे के समान पड़े हुए राजा को ज्ञान उपदेश करने लगे कहा कि राजा जिस के निमित्त तू ऐसे शोक में पड़ा है यह तुम्हारा कौन है इस सृष्टि में नहीं विदित कि कितने बार यह तुम्हारा लड़का और इस का तू लड़का हुआ होगा जिस प्रकार नदी में वायु के कारण धार के बेग से बहुतेरे तृण काष्ठ एकट्ठे हो फिर पृथक पृथक हो जाते हैं ऐसा ही प्राणियों का योग और वियोग होता है देखो खेत में बहुतेरे बीज बोए जाते हैं क्या सबों में दूसरे बीज होते ही हैं किसी में अनेक किसी में एक भी नहीं होते ऐसा ही प्राणियों की दशा है इस में भगवान की माया कारण है बिलाप करना मूढ़ों का काम है यह भी देखो कि क्या मैं क्या तू क्या दूसरे प्राणी जन्म के पहले न थे न मरने के अनन्तर रहेंगे वैसा ही बीच के समय में भी इन का अभाव समझना चाहिये अज्ञान के कारण देख पड़ते हैं और जैसा बीज से बीज होता है खेत जैसा का तैसाबना रहता है बीज के बोने और उत्पन्न होने से उस में कोई विकार नहीं होता वैसा ही मा बाप के देह से देह उत्पन्न होता जीव में कोई बिकार नहीं होता इस प्रकार ज्ञान की बातें सुन राजा आंख खोल कर बोला महाराज आप दोनों कौन हो सूर्य्य के समान

ज्ञान से तरते हैं। भगवान के प्रिय अवधूत के वेष धारण कर ब्राह्मण लोग हमारे समान मूढ़ों के उद्धार के निमित्त पृथिवी पर विचरते हैं महाराज मैं अज्ञान अन्धकार में पड़ा हूं ज्ञान दीप दिखला कर उस से मुझे उबार कीजिये इसे सुन अंगिरा ऋषि बोले कि मैं तुम्हे पुत्र देने वाला अंगिरा ये भगवान के प्रिय नारद जी हैं तुम्हे शोक सागर में डूबते देख इस के अयोग्य समझ आये हैं जब तुम ने लड़का मांगा था उसी समय ज्ञान का उपदेश करता पर पुत्र में तुम्हारा आग्रह देख सहज से ज्ञान होने के निमित्त पुत्र दिया क्या स्त्री क्या पुत्र जितने संसार के पदार्थ हैं ऐसा ही क्षणभंगुर हैं शोक मोह और अनेक दुख में डाले रहते हैं ज्ञान के बिना इनसे छुटकारा नहीं होता इतने में नारद जी मरे लड़के की ओर हो बोले कि हे जीव तू इस शरीर में पैठ जा शोक में पड़े अपने मा बाप हित मित्र को सुख दो राज भोगो इसे सुन जीव बोला महाराज कितने बार ये मेरे लड़के हुए होंगे और मैं इनके किस का कौन लड़का है किस का कौन बाप ये सब के सब भ्रम में पड़े हैं झूठ मूठ शोक करते हैं इस प्रकार कह जीव जहां का तहां गया सब लोग आश्चर्य्य में पड़े राजा ने संसार को असार समझा फिर नारदजी ने उसे ज्ञान उपदेश किया वह तप करने लगा उस की पतिव्रता रानी उस की सेवा करती थी उन विष देनेवाली पापिन रानियों को बाल हत्या का प्रायश्चित्त करना पड़ा संसार में धिक्कार पाती थीं और अपने किये को पछताती थीं उन को सोचना था कि भगवान की दया हुई हम लोगों में से किसी को एक लड़का हुआ यह हमारा भी लड़का है इस पर ऐसी प्रीति करें कि पति हम लोगों का निरादर न करे और बड़े होने पर यह लड़का हम को अपनी सौतेली मा न समझे अपनी मा के समान हमारी आज्ञा माने और मरे पर अपनी मा के समान हमारा पारलौकिक काम करे यह नहीं सोचा कि राजा हमारे सोहाग का हेतु है लड़के के मर जाने पर कैसे शोक में पड़ेगा कदाचित् मरे तो हम

को रखापा भोगना पड़ेगा निदान उन लोगों को रखापा भोगना पड़ा और परलोक में नरक की यातना में पड़ीं इस कारण कहता हूं कि पति के दूसरे ब्याह करने पर स्त्रियां सावधानी से रहें सौतिडाह न करें नहीं तो चित्रकेतु राजा की रानियों के समान दुख भोगना पड़ता है।

अपने लड़के लड़कियों को अच्छी चाल चलन सिखाना और पढ़ने लिखने की ओर लगाना भी स्त्रियों का मुख्य काम है जैसा मा की बोली सिखने में लड़के को परिश्रम नहीं पड़ता वैसा ही जिस विषय को मा सिखलावेगी उसे लड़के शीघ्र सिख सकेंगे इस हेतु यदि मा लड़के को अच्छा होना उस से सुख भोगना और संसार में यश चाहें तो उसे अच्छी चाल सिखलाने और पढ़ाने लिखाने में प्रयत्न करें कहा है कि मा बाप लड़के के बैरी हैं यदि उसे न पढ़ाने लिखावें।

अवध के प्रदेश में एक राजा था दैव बस उस के आस पास के राजों से विरोध बढ़ा वे सब के सब उस पर चढ़े कोट घेर लिया पहले तो उसने बैरियों से मेल के निमित्त अनेक प्रयत्न किया पर दैव बस उन लोगों ने एक भी न माना कहा कि शस्त्र रख कर हमारे पास चले आइए उसने कहला भेजाया कि मैं चत्री हूं शस्त्र त्याग करना मेरे धर्म्म से विरुद्ध है युद्ध के पहले मेल का प्रयत्न करना चाहिये मनुष्यों का नाश प्रजों को पीड़ा न हो यह राजा का धर्म्म है इस कारण मेल चाहता हूं यदि आपलोग न मानोगे तो लडूंगा शास्त्र नहीं रक्खूंगा निदान लड़ाई होने लगी राजा शत्रुओं के सन्मुख गिरा परलोक सिधारा उस की पतिव्रता रानी व्याकुल हुई एक अबला वाला दूसरे उस का पैर भारी था सोचा कि पति के अभाव में स्त्रियां चाहें जीये चाहें मरें पर यदि गर्भिणी हों तो जिस उपाय से गर्भ की रक्षा हो उसे करना चाहिये नहीं तो उन्हें गर्भपात का पाप होता है इस हेतु खिड़की के पथ से भागी चली चली सरयू के उत्तर किनारे पर गौतम ऋषि के आश्रम के निकट एक ग्राम में एक कान्दू के घर शरण लिया किसी प्रकार निर्वाह करती थी

दैव का करना थोड़े दिनों के बीते उस को लड़का हुआ उस समय वहां जितनी स्त्रियां थीं उस लड़के को देख चकित हो गयीं कहने लगीं ऐसा सुन्दर लड़का तो आज पर्य्यन्त नहीं देखा दैव को चाहता था कि इस को जन्म किसी राजे महाराजे का घर देता रानी की बोलचाल व्यवहार और लड़के की सुन्दरता देख सब स्त्रियां परस्पर कहती थीं कि यह किसी बड़े घर की है नहीं विदित होता कि क्यों घर से निकल आई है रानी को एक तो प्रसव की व्यथा दूसरे खाने पीने की कोई सामग्री न थी अति व्याकुल हो गई सोचा कि यदि मैं इस लड़के को किसी को दे कर आप किसी कुएं वा तालाब में डूब मरूं तो आत्मघात और बालहत्या का पाप होगा एक तो पाप किया उसे भोगती हूं इतने में कई स्त्रियां एकट्ठी हो गयीं उन में से बहुतेरी स्त्रियां पूछती थीं कि तू कौन है कहां से आई क्यों घर से निकली रानी किसी को उत्तर नहीं देती थी भगवान का करना इतने में एक ब्राह्मण की स्त्री आ गयी उसने उस अनाथ प्रसूता और लड़के को देख और उस प्रसूता के स्वभाव सुन समझ लिया कि यह किसी बड़े कुलीन के घर की है एक तो यह ऐसी विपदा में फसी है दूसरे पूछ पाछ करने से अधिक लज्जा में पड़ न जाने क्या करे इस समय तो इस दीन को शरण देना ही उचित है जाति पांति बुराई भलाई की ओर दृष्टी देने का समय नहीं है पीछे देखा जागा निदान उसने कहा कि ऐ प्रसुता अपने बच्चे को उठा ले यावत् पर्य्यन्त तुझे प्रसव की वेदना है तावत पर्य्यन्त मेरे घर चल दिन काट जो कुछ मुझ से बनेगा तुम्हारी सेवा करूंगी तू व्याकूल मत हो सब दिन परमेश्वर एक समान नहीं रखते कर्म्मवस पान के समान फेरते रहते हैं दुख के समय घबड़ाना नहीं चाहिये नहीं तो वह अधिक व्याकूल कर देता है रानी लड़के को गोदी कर ब्राह्मणी के पीछे चली ब्राह्मणी ने अपने गोशाल में एक घरझाड़ बुहार उसे दिया खाने पीने और औषध का भी सुबिहिता लगा दिया रहते रहते उस के चाल

व्यवहार से लोगों को विदित हो गया कि यह निन्दित काम कर घर से नहीं निकली हैं किसी बड़े घर की है कोई नहीं रहा इस हेतु चली आई है निदान ब्राह्मणी ने अपने घर के लड़के बालों और स्त्रियों से कहा कि इस के नाम ग्राम पूछने की आवश्यकता नहीं है इस के लड़के को देखना चाहिये यह भाग्यवान देख पड़ता है जब यह अपनी अवस्था पैर पहुंचेगा तब इस दुखिया का दुख जाता रहेगा जो कुछ इस स्त्री से बन पड़े उस काम को करे रुखा सुखा खाने को पावे इतना इस के निमित्त अवश्य होना चाहिये निदान रानी उस ब्राह्मणी की आज्ञा में रहती जो बन पड़ता उसे करती जो कुछ पाती उस से निबाह करती दैव बस अच्छी वस्तु पाने पर भी विधवा के धर्म्म सोच कर उस के निकट नहीं जाती रुखे सुखे से दिन बिताती पतिव्रताई को पालती थी जब कोई काम नहीं रहता वा थक जाती थी उसी गोशाल के घर में जा बैठती थी वहां उस लड़के को देखने से स्वामी का स्मरण होने पर जो दुख उसे होता था और लड़के के निर्वाह और अपनी गति का उपाय न देख कर जिस चिन्ता में पड़ती थी उस का वर्णन कौन कर सकता है निदान लड़का लड़कों के साथ डोलने फिरने लगा उसे देख रानी ने ढाढ़स कर सोचा कि चिन्ता से निबाह नहीं होता मैं तो चिन्ता की मूर्ति हो रही हूं पर जहां पर्य्यन्त बन पड़े धर्म्म रख कर मनुष्यको अच्छे काम के निमित्त प्रयत्न करना चाहिये फल का हां ना न होना ईश्वर के अधीन है यदि यह लड़का पढ़ लिख लेता तो नौकरी चाकरी कर निवाह करता बिना पढ़ा लिखा मनुष्य पशु के सामान ही होता है प्रायः उसे पशु के सामान काम करना पड़ता है निदान जो कुछ खाने को पाती उस में से बचा कर बुरे भले खेलौना ले लेती और ब्राह्मण के लड़कों को जो खेलौने मिलते उन सभों पर वर्णमाला के एक एक अक्षर लिख कर उस अक्षर को उस खेलौने का नाम कह कर अपने और ब्राह्मण के लड़कों को दे दे कर कई बार उसी अक्षर के नाम से उसी खेलौने को कह कर लड़कों से

उठवाती और रखवाती थी इस से जिस लड़के से उठवाती रखवाती थी उस की निश्चय हो जाता था कि इस का यही नाम है कभी कभी लड़कों को एकट्ठे कर कहती थी कि जो लड़का हमारे कहे हुए खेलौने की पहचान कर पहले उठा लेगा उसे दूसरा खेलवना और मिठाई भी मिलेगी इस से लड़के अचरों पर ध्यान रखते थे जब सावकास पाती थी लड़कों को एकट्ठे कर अचरों को कह कर खेलौना मांगती थी जो लड़का अचर के नाम लेत ही उस नाम के खेलौना उठा लेता था उसे एक टुकड़ा मिठाई और एक खेलौना दे कर आकारादि स्वरों में से आकारादि क्रम से स्वर सहित ककारादि व्यंजन लिख कर दे देती थी और उस का वही नाम रेखती थी जैसा किसी का का किसी का कि किसी का की इस प्रकार सब वर्णमाला के स्वर और व्यजनों की पहचान करा कर स्वर सहित सब अचरों को सिखला दिया इस चतुराई को देख ब्राह्मण के घर के सब लोग प्रसन्न हो उस के निकट खेलौने और मिठाई रख देने लगे ब्राह्मण के लड़कों के अचर आरम्भ का वर्ष आया उन को अचर आरम्भ करा गया उन के साथ राजपुत्र ने भी आरम्भ किया लड़के अचर पहचानते ही थे शीघ्र पढ़ने लिखने लगे राजकुमार का गर्भ से एगारहवा वर्ष का आरम्भ हुआ रानी को चिन्ता हुई कि चत्रियों का यज्ञोपवीत संस्कार एगारहवे वर्ष होता है संस्कार से बुद्धि बढ़ती है संस्कार के और सामान को कौन चलावे मेरी जाति पांति में भी लोगों को सन्देह है परन्तु जिस घट घट बासी करुणा निधान परमेश्वर ने इस का जन्म दिया है वह इस का निवाह करेगा मेरी चिन्ता से क्या होगा इस प्रकार सोच विचार करती ही थी कि एकाएक उस के मन में आया कि यहां के प्रतिष्ठित लोगों के आचार्य्य शूलपाणि नाम महात्मा गंगा सर्यू के संगम पर बास करते हैं सुना है कि वेद विद्या में निपुण त्यागी बड़े दयावान हैं उन के पास इस लड़के को भेजूं कदाचित परमेश्वर उनके अन्तष्करण में करुणा उत्पन्न करें इस लड़के का संस्कार कर

अपने निकट रक्खें तो निश्चय है कि इस की भलाई होगी पहले से लड़के को शीलचाल नमृता सिखलाती रहती थी उस समय और भी सचेत करा कर शूलपाणि पण्डित के पास भेजा लड़का जा हाथ जोड़ प्रणाम कर कहा कि स्वामी मैं सब समान विहीन दीन हूं मेरे यज्ञोपवीत सं-स्कार का समय आगया है मा छोड़ मुझे कोई नहीं है उस ने मुझे आप के पास भेजा है आप की दया से मेरा संस्कार हो जाता और निकट रहने से पढ़ना लिखना होता तो मेरा जन्म सार्थक होता पण्डित जी महाराज स्वभाव से दयालु थे लड़के की सुसीलता रूप और दीनता देख कहा कि संस्कार करने के समय पहले जाति और गोत्र जानना चाहिये ब्राम्हण क्षत्री वैश्य को छोड़ दूसरे का संस्कार नहीं होता तू किस जाति और गोत्र में उत्पन्न हुआ है लड़के ने कहा मैं नहीं जानता मेरी मा जानती होगी महाराज ने कहा जा कर पूछो लड़के ने मासे कहा कि पण्डित जी मेरी जाति और गोत्र पूछते हैं रानी ने कहा कि तू जातिका क्षत्री है मै नहीं जानती थी कि मैं ऐसी अभागी न हूं नहीं तो तुम्हारा गोत्र भी पूछ लेती लड़के ने पण्डित जी से ज्यौंकात्यौं कह सुनाया पण्डित जीने सोचा कि यदि इस की मा निन्दित होती तो ब्राम्हण कहती और किसी न किसी गोत्र का भी नाम लेलेती इसकी सचाई लडके की सुशीलता और अच्छे भाग्य की चिन्हाटी अच्छी जाति का निश्चय कराती है इस हेतु इस दीन का त्याग करना उचित नहीं है निदान उन्हों ने कहा कि अच्छे समय में क्षत्रियों के विधान से तुम्हारा संस्कार होगा। तिथि वार नक्षत्र देख उस लड़के का यज्ञोपवीत संस्कार किया पहले समय यज्ञो पवीत होने के अनन्तर पढ़ने के समय गुरु के समीप रहते थे भीख माग कर गुरुके निकट रख देते थे यदि गुरु आज्ञा देते थे तो भीख की वस्तु विद्यार्थी अपने खाने पीने को ले लेते थे इसी के अनुसार यज्ञोपवीत के अनन्तर पहली पहल मा वा वहिन वा मौसी वा जिस्से अनादरकी सम्भा-वना न हो उस स्त्री से भीख लाने की आज्ञा स्मृति में दी है इस हेतु

वह लड़का पहले अपनी मा के निकट भिक्षा के निमित गया उस समय उस स्त्री के पास क्या था कि दे इस हेतु उसे बड़ा दुख हुआ कुछ पैसे और थोड़े से बतासे भिक्षा पात्र में देदिया और कहा कि हे पुत्र मैं तुम्हे थोड़ी सी शिक्षा भिक्षा देती हूं यदि उसके अनुसार चलोगे तो पहले तुम्हारे गुरु प्रसन्न हो कर विद्या पढ़ावेंगे और तुम्हे आशिर्बाद देंगे तुम्हारी विद्या सफल होगी ।

हे पुत्र पहली शिक्षा यह है कि जो बेद शास्त्र में कहे हुए धर्म्म पर स्थिर रहता है वह संसार में यश उतम सुख और परलोक में शुभ गती पाता है ।

बेद शास्त्र में जो कहा है उसको उलटे तर्क से अनादर नहीं करना चाहिये जो अनादर करता है वह निन्दित गिना जाता और दुख पाता है ।

गुरु की आज्ञा को छल छोड़ कर मानना और उनको प्रसन्न रखना चाहिये ।

जो कुछ खाने को मिले उसे हाथ पैर धो आचमन कर पवित्र हो खाना और खाने के समय दूसरी ओर चित न ले जाना बड़ी सावधानी के साथ खाना और खाकर हाथ मुख भली भांति धो डालना इस में कुछ भी आलस्य न करना चाहिये ।

सदा भोजनके समय अन्न का आदर करना चहिये समझना चाहिये कि यह मेरा प्राण है प्रारब्ध बस मीठा तीता रूखा सुखा जो कुछ मिल जाय उसकी निन्दा नहीं करनी चाहिये खाने की वस्तु देख प्रसन्न होना चाहिये और प्रतिदिन यह मुझे मिले ऐसा कह कर भोजन करना चाहिये ।

यदि आदर कर अन्न खाया जाता है तो तेज और इन्द्रियों की शक्ति बढ़ाता है आदर न कर खाया हुआ इन दोनों का नाश कर देता इस हेतु उपर कही हुई रीति अपनी खाने की वस्तु का आदर कर खाना चाहिये ।

अपना जूठा किसी को नहीं देना चाहिये एक बार दिन और एक बार रात्रि को भोजन करना चाहिये तीसरे बार भोजन नहीं करना चाहिये यदि तीसरे बार खाने की अति आवश्यकता हो तो मूल फल खाना चाहिये उस में भी बहुत भोजन नहीं करना चाहिये खा कर मुख हाथ पैर बिना धोए कहीं जाना नहीं चाहिये ।

बहुत भोजन रोग उत्पन्न करता इसी हेतु आयुर्बल का नाश करता उत्तम कामों में विघ्न डालता है इसी हेतु स्वर्ग भी नहीं होने देता पुण्यों का भी नाश है और बहुत भोजन करने वाले को लोग दरिद्री कहते हैं इसहेतु बहुत भोजन नहीं करना चाहिये ।

आंख जीभ नाक त्वाचा कान ये पांच ज्ञान की इन्द्रियां हैं क्रम से रूप रस गन्ध स्पर्श शब्द ये पांच इनके विषय हैं सदा सावधान रहना चाहिये कि इन्द्रियां अपने अपने विषय में अत्यन्त लगने न पावें यदि ये अपने अपने विषय में आसक्त हो जाती हैं तो पढ़ना लिखना सब जाता रहता है इसी पर कथा तथा कोई काम नहीं होता ।

इस में सन्देह नहीं है कि यदि मनुष्य इन्द्रियों को उनके विषय में लगाये रहता है तो अनेक दोषों का भागी होता है और इन्द्रियों को अपने बस रखने से इस लोक में सुख यश और पर लोक में उत्तम गति पाता है।

अभि लषित वस्तु के लाभ होजाने से अभिलाषा पुरी नहीं होती घी पड़ने से आगि के समान ज्यों ज्यों इष्ट वस्तु मिलती जाती है त्यों त्यों अभिलाषा बढ़ती जाती है ।

जिसे सब बिषय मिलते और उनको भोगता और जो बिषयों के निकट नहीं जाता उनमें त्यागी श्रेष्ट है ।

बिषय भोगने से विषयों का त्याग नहीं हो सक्ता उनमे चणिकता और रोग उत्पन्न करना आदि दोष देखने से सहजसे उनका त्याग हो जाताहै ।

बड़ाई वा निन्दा सुन कर छूनेसे सुख वा दुख देने वाली वस्तयों को

छूकर सुरूप वा कुरूप देख कर सुस्वादु वा कुस्वादु खाकर सुगन्ध वा दुर्गन्ध सूंघ कर जो न प्रसन्न होता न अप्रसन्न होता उसे जीतेन्द्री समझना चाहिये ।

जैसा चामके बासन में एक भी छेद हो जाने से पानी नहीं ठहर सकता गिर ही जाता है वैसाही इन्द्रियों में कोई इन्द्री बिषय में लग जाती है तो बुद्धि भ्रष्ट हो ही जाती है ।

मनुष्यों को चाहिये कि देह को पीड़ा न देता हुआ उपाय से सब इन्द्रियों को बस कर और मन को रोक कर सब अपने अर्थों को सिद्ध करे ।

अपने बड़े के साथ एक आसन पर नहीं बैठना चाहिये आप बैठा हो उस समय यदि कोई बड़ा आजा तो उठ कर उस को प्रणाम करना चाहिये ।

बड़े के आने पर छोटे का प्राण उपर जाने लगता है उठ कर आदर और प्रणाम करने से फिर भीतर आ जता है ।

जो सदा बड़ों को देख कर प्रणाम करता है और उस की सेवा करता है उस के आयुर्बल विद्या यश और बल ये चारो बढ़ते हैं ।

मामा चच्चा श्वसुर ऋत्विज और गुरु ये वय में अपने से छोटे भी हों तो उन को उठ कर प्रणाम करना चाहिये ।

मौसी मामी सास और फुफू ये गुरु की स्त्री के समान हैं गुरु की स्त्री के समान इनका आदर और प्रणाम करना चाहिये ।

परदेश से आकर बड़े भाई की स्त्री और बड़े जाति भाई की स्त्री को चरण छूकर प्रणाम करे और देश में रहने से केवल प्रणाम मात्र करना चाहिये ।

फुफू मौसी और ज्येठी बहिन ये माके समान हैं मा इन से बड़ी है ।

अपने ग्राम वा नगर का बासी गुणरहित दश बर्ष का बड़ा हो और गुणी पांच बर्ष का बड़ा हो बेद पढने वाला तीन बर्ष का बड़ा हो और अपने कुलका थोड़े दिनका बड़ा हो तो उसके साथ मित्र के समान बर्त्तना चाहिये कहे हुए बर्ष से अधिक बड़ा हो तो उसे बड़ा समझना चाहिये ।

दश वर्ष का ब्राह्मण और सौ वर्ष का क्षत्री ये परस्पर पिता पुत्र के समान हैं इन में ब्राह्मण पिता और क्षत्री पुत्र है।

उचित प्रकार से अर्ज्जा हुआ धन और अवस्था में बड़प्पन पितृव्यादि सबन्ध श्रौतस्मार्त कर्म्म और विद्या ये पांच आदर के कारण हैं इन में पहले से दूसरा बड़ा गिना जाता है अर्थात धनी और अवस्था में बड़ा ये दोनों एकट्ठे हों तो अवस्था में बड़ा बड़ा गिना जाता है, इसी प्रकार धनी अवस्था में बड़ा और सबन्ध में बड़ा ये एकट्ठे हों तो संबन्ध में बड़ा बड़ा गिना जाता है इसी प्रकार नीचे भी समझो।

रथ पर चढ़ कर आने वाला अति बूढ़ा रोगी बोझिया स्त्री ब्रह्मचारी राजा और वर इन में से कोई सन्मुख चला आता हो तो आप बांएं वा दहने हट कर उसे राह देदेना चाहिये।

पढ़ानेवाले गुरु को भी माता पिता ही समझना चाहिये इससे द्वेष करने वाला कृतघ्न होता है।

जन्म देने वाला पीता और पढ़ाने वाला इन दोनों में पढ़ानेवाला श्रेष्ठ गिना जाता है क्यों कि पढ़ने से मनुष्य इस लोक और परलोक दोनों को बना सकता है।

थोड़ा वा बहुत पढ़ाने वाला और अच्छी बात सिखलाने वाला गुरु कहलाता है।

चाहे गुरु कहे वा न कहे विद्यार्थी को चाहिये कि पढ़ने और उसके हित करने में प्रयत्न करता रहे।

पढ़ने वाले को गुरु के सन्मुख बाणी बुद्धि मन और इन्द्रियों को सावधानी से बस कर हाथ जोड़े उनके रुख देखते रहना चाहिये।

ओढ़ने के बस्त्र से दहना हाथ बाहर रक्खे और शान्त हो कर आज्ञा पाकर बैठे गुरु के आगे वस्त्र भूषण का आडंबर नहीं दिखलाना चाहिये साधारण भेष से रहना चाहिये।

यदि गुरु उठते हों तो उनसे पहले उठ खड़ा होवे बैठने के समय गुरु के बैठ जाने पर उनकी आज्ञा पाकर बैठना चाहिये।

यदि गुरु बैठे हों उस समय कुछ कहना हो वा उनका वचन सुनना हो तो उठ कर नम्रता से कहना और सुनना चाहिये सन्मुख न हों तो आप सन्मुख होकर और दूर हों तो निकट जा कर प्रणाम कर बोलना और उनकी आज्ञा सुननी चाहिये उनके निकट बैठने वा सोने का काम पड़ जाय तो उनके आसन से नीचे आसन और सेज पर बैठना सोना चाहिये ।

कभी गुरु का नाम न लेना चाहिये और इन के बोलने चालने और चेष्टा का अनुकरण नहीं करना चाहिये ।

झूठा वा सच्चा गुरु का दोष कहा जाता हो वा निन्दा की जाती हो तो कान मुन्द कर चला आना चाहिये ।

जैसा खनते खनते मनुष्य पानी पा जाता है वैसाही सेवा करते करते शिष्य गुरु की विद्या पाजाता है ।

स्त्री वा कोई छोटे से छोटा मनुष्य कल्यान का काम करता हो उसे आप भी करना चाहिये, यह नहीं समझना चाहिये कि जिसे छोटे करते उसे मैं कैसे करूं ।

स्त्री रत्न विद्या धर्म्म पवित्रता सुन्दर वचन नाना प्रकार के शिल्प अर्थात् कारीगरी जहां से मिले वहां से लेलेना चाहिये ।

वर्ष में बड़े होने से वा केश पक जाने से बड़ा नहीं होता जो ज्ञान में बड़ा हो वही बड़ा है ।

धर्म्म चाहने वाले को चाहिये कि ऐसा काम न करे जिस में किसी को दुख पहुंचे और मधुर वचन बोलना चाहिये ।

सदा असत्य न बोलने से जिसकी वाणी और रागद्वेष न करने से मन शुद्ध रहता है और निन्दित वचन बोलने से वाणी और निन्दित विषय पर जाने से मन रोका रहता है वह पुरुष मुक्ति का भागी होता है ।

दुखि होने पर भी मर्म स्थान में घाव करने वाली वाणी न बोलना चाहिये और किसी की हानि करने वाले काम में बुद्धि को न जाने

देना चाहिये और वचन ऐसा बोलना चाहिये जिस से किसी को उद्वेग न हो ।

जूआ कलह दूसरे का दोष कहना असत्यवचन बोलना दूसरे की स्त्री पर दृष्टि लगाना वा उस से बात चीत करना ये सब काम अति हानि करते हैं ।

किसी प्रकार दूसरे की स्त्री के साथ मेल नहीं करना चाहिये क्योंकि पुरुष को दोषी कर देना स्त्रियों का स्वभाव है मा हो वा बहिन वा बेटी हो किसी स्त्री के साथ एकान्त में नहीं बैठना चाहिये क्योंकि इन्द्रियों का ऐसा बल है कि बड़े बड़े ज्ञानियों को भी बात की बात में अपनी ओर खींच लेती हैं ।

पिता ब्रह्मा की मूर्ति माता पृथिवी की मूर्ति और सहोदर भाई अपने आत्मा की मूर्ति है इस कारण इन का कभी अनादर नहीं करना चाहिये ।

लड़के की उत्पत्ति के समय जो मा बाप क्लेश सहते हैं उस से जीवन पर्य्यन्त सेवा करने से भी छुटकारा नहीं हो सकता इस कारण सदा मा बाप की सेवा करते रहना चाहिये इनके प्रसन्न रहने से सब देवता प्रसन्न रहते हैं माता पिता की सेवा सब धर्म्मो में श्रेष्ठ है जिस धर्म्म के करने से उनको आज्ञा पुरी न हो वह धर्म्म धर्म्म नहीं है जिसने मा बाप का आदर किया उसने सब धर्म्मो का आदर किया जिसने न किया उस की सब क्रिया विफल होती है यावत पर्य्यन्त मा बाप जीते रहें तावत पर्य्यन्त स्वतन्त्र होकर अपने मन का काम नहीं करना चाहिये सदा उन की सेवा में रहना चाहिये जो कुछ करे उनकी आज्ञा लेकर करे ।

हे पुत्र ईश्वरने प्रजों को भय से बचाने के निमित्त इन्द्र वायु यम सूर्य्य चन्द्रमा अग्नि वरुण कुबेर इन आठों के सार लेकर राजा बनाया इस कारण यह अपने तेज से सब को बस रखता है यह देखने में मनुष्य

जान पड़ता है पर इसे उपर कहे हुए आठो देवतों का रूप समझना चाहिये यह लड़का भी हो पर इससे डरते रहना चाहिये अग्नि निकट जाने वाले को जराती है वह यदि अप्रसन्न हो तो कुल के कुल को खाक कर देता है समय और कार्य्य वस अनेक रूप होजाता है इसकी प्रसन्नता में लक्ष्मी पराक्रम में बिजय और क्रोध में मृत्यु बसती है इस कारण अज्ञान में पड़ कर जो राजा से द्वेष करता है वह शीघ्र नष्ट हो जाता है क्योंकि यह अपने द्वेषी को जीता नहीं छोड़ता इस हेतु राजा के नियमों के बाहर नहीं होना चाहिये ईश्वर ने राजा की सहायता के निमित्त दण्ड उत्पन्न किया इस दण्ड के भय से स्थावर जंगम सब जगत् अपने अपने धर्म्म पर स्थिर रहते हैं दण्ड प्रजों को धर्म्म सिखलाता और रक्षा करता है सब प्रजा सो जातीहैं उस समय जागता रहता है पण्डित लोग दण्ड को धर्म्म कहते हैं यदि राजा आलस्य छोड़ दण्ड के योग्य प्रजों को दण्ड न दे तो दुष्ट बलवान दुर्बल प्रजों को पका कर खालेवें।

हे पुत्र यह निश्चित होता है कि घट घट बासी सच्चिदानन्द करुणा निधान भगवान ने इस जगत की रचना कर इसके निबाह के निमित्त सब प्राणियों को सुख से समय बिताने के हेतु जैसा जल बायु अग्नि अन्न फल फूल और औषध आदि अनेक वस्तु उत्पन्न की वैसाही जगत की भलाई के अर्थ अनेक नियम बनाया और इसके चलाने के निमित्त अनेक ऋषि मुनियों को प्रगट किया जो ईश्वर के नियमों को छोड़ काम करता है वह अपने कियेका फल पाता है।

हे पुत्र यदि उपर कहे हुए हमारी शिक्षा के अनुसार चलोगे तो तुम्हारे गुरु प्रसन्न हो सब विद्या पढ़ा देंगे सुख से तुम्हारा जीवन बीतेगा ईश्वर तुम्हारे उपर प्रसन्न रहेंगे।

निदान वह राजकुमार मा की भिक्षा को झोरी में और शिक्षा को हृदय में रख पण्डित जी के निकट गया जो कुछ भिक्षा मिली उसे गुरु के निकट रख प्रणाम कर आज्ञा पा बैठ गया गुरु ने सब कामों को पुरा किया पढ़ाने लगे उस लड़के का बिनय शील बुद्धि देख दिन दिन उनकी

प्रीति बढ़ने लगी उसे सब बिद्या पढ़ाया वह चत्री था इस हेतु यह बिद्या में भी निपुण कर दिया उनके आश्रम पर अनेक राजेरजवारे आते थे उस लड़के को देख चकृत होते उस की बुद्धि की प्रशंसा करते थे एक दिन पण्डित के आश्रम पर वहां का राजा आया उस राजकुमार को चत्री ब्रह्मचारी रूप में देख निश्चय कर उसके रूप शील और विनय देख पण्डित जी से कहा कि महाराज यह किस राज बंस का कुमार है इस पर आप की बड़ी दया देख पड़ती है जिस पर आप से महात्मा की कृपा हो उस पर परमेश्वर की प्रसन्ता निश्चय होती है पण्डित जीने उसका सब बृतान्त कहा और उस राजा से दृढ़ निश्चय कर कहा कि यह फिर अपने बाप के राज पर पहूंच जागा अन्त में कहा कि आप इसके साथ अपनी कन्या का ब्याह कर दीजिये इसका राजा होना निश्चय है थोड़े ही दिनों मे आप की कन्या महारानी कहाने लगेगी निदान उस राजा ने उसकी जाति पांति अच्छी समझ और बिद्या शील विनय रूप देख पण्डित जी की आज्ञा मानी उस राजकुमार को अपनी कन्या दे थोड़े ग्राम देदिये राजकुमार अपनी माके साथ उन ग्रामों मे राजनीति से राज कर ने लगा थोड़े दिनों के अनन्तर उस के श्वसुर को एक राजा के साथ बिरोध बढ़ा अन्त मे लड़ाई होने लगी उसमें राजपुत्र ने उस राजा को बस कर लिया उससे कर लेने लगा इसके अनन्तर थोड़ी सेना रख अपने बाप के बैरियों पर चढ़ा उनको अपने बाप के साथी किया उनका राज्य अपने राज्य में मिला लिया वह रानी अपने महलों में पहूंची राजकुमार नीति से प्रजा पालन करने लगा सब प्रजा सुखी थी उसे आशीर्बाद देती थीं रानी की प्रशंसा करती थीं रानी पुत्र को देख प्रसन्न होती स्वामी के चरण को ध्यान करती रहती थी भलेकी भलाई ईश्वर निबाहते हैं रानी को कौन आशा थी की मेरा लड़का राजा होगा परन्तु इसकी पति व्रताई ने उसके लड़के को राज्य पर बैठाया जैसा उसका दिन पलटा वैसा सब का पलटे ईश्वर इसग्रन्थ के पढ़ने वाली कुलांगनी पर प्रसन्न हो कर उनको बुद्धि दें इतिशम् ।

सूचना ।

सब को विदित है कि सर्वशक्तिमान कृष्णभगवान ने लोगों की भुक्ति मुक्ति के उपाय जानने के निमित्त परम भक्त अधिकारी अर्जुन को निमित्त कर गीता में कर्म्म और ज्ञान का उपदेश किया है सुनने से इस के श्लोक सहज जान पड़ते हैं पर अर्थ पर ध्यान देने और आचार्य्यों की टीकों को देखने से अति गूढ़ विदित होते हैं इस छोटे से गून्थ में सब वेदों का सार अर्थ रखदिया है इस कारण इस की कठिनता आश्चर्य्य का विषय नहीं है सब आचार्य्यों ने अपने २ मत के अनुसार टीका की है पर शंकराचार्य्य की टीका भाष्य में गीता का यथार्थ अर्थ सब न्याय आदि शास्त्रों का खण्डन वेदान्त मतका समर्थन किया है इस कारण यह बहुत बड़ा और कठिन है इस के प्रतिपद और वाक्यों के हिन्दी भाषा में इस की रीति के अनुसार उल्था कर इस का नाम "शंकरमत प्रकाश" रक्खा है इस के पढ़ने के समय श्लोकों पर ध्यान देने से उन की हिन्दी भाषा में टीका उन पर न ध्यान देने से इस भाषा में ...न्त का गून्थ जान पड़ेगा इस में गीता के यथार्थ अर्थ शंकराचार्य्य का मत वेदान्त का सिद्धान्त भली भांति वर्णन किया गया है इस हेतु यह बड़ा हो गया है इस में कुछ न्यूनाधिक ५०० पृष्ठ होंगे पृष्ठ भी बड़े हैं छप जाने पर इस का नक्षावर २ मुद्रा होगा पर छपने के पहले इस नगर के रहने वाले महाशयों को १॥) और दूसरे नगर वा ग्राम के बासियों को १॥≈) भेज देने से भेज दिया जागा जिन महात्मों को उक्त विषयों के जानने की अभिलाषा हो वे पटना कालिज में रामावतार ओझा के पास उक्त नक्षावर भेज देंगे तो छप जाने पर वे उन के पास भेज देंगे ।